सुसमाचार

अध्याय 5

यूहन्ना रचित सुसमाचार

THIRD MILLENNIUM MINISTRIES

Biblical Education. For the World. For Free.

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें- http://thirdmill.org

© 2012 थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग का समीक्षा, टिप्पणियों या लेखन के लिए संक्षिप्त उद्धृणों के प्रयोग के अतिरिक्त, किसी भी रूप में या धन अर्जित करने के किसी भी साधन के द्वारा प्रकाशक से लिखित स्वीकृति के बिना पुन: प्रकाशित करना वर्जित है। Third Millennium Ministries, Inc., P.O. Box 300769, Fern Park, Florida 32730-0769.

थर्ड मिलिनियम की मसीही सेवा के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलिनियम मसीही सेवकाई एक लाभनिरपेक्ष मसीही संस्था है जो कि ***मुफ्त में, पूरी दुनिया के लिये, बाइबल पर आधारित शिक्षा*** मुहैया कराने के लिये समर्पित है। उचित, बाइबल पर आधारित, मसीही अगुवों के प्रशिक्षण हेतु दुनिया भर में बढ़ती मांग के जवाब में, हम सेमनरी पाठ्यक्रम को विकसित करते हैं एवं बांटते हैं, यह मुख्यतः उन मसीही अगुवों के लिये होती है जिनके पास प्रशिक्षण साधनों तक पहुँच नहीं होती है। दान देने वालों के आधार पर, प्रयोग करने में आसानी, मल्टीमिडिया सेमनरी पाठ्यक्रम का 5 भाषाओं (अंग्रेजी, स्पैनिश, रूसी, मनडारिन चीनी और अरबी) में विकास कर, थर्ड मिनिलियम ने कम खर्च पर दुनिया भर में मसीही पासबानों एवं अगुवों को प्रशिक्षण देने का तरीका विकसित किया है। सभी अध्याय हमारे द्वारा ही लिखित, रुप-रेखांकित एवं तैयार किये गये हैं, और शैली एवं गुणवता में द हिस्टरी चैनल © के समान हैं। सन् 2009 में, सजीवता के प्रयोग एवं शिक्षा के क्षेत्र में विशिष्ट चलचित्र उत्पादन के लिये थर्ड मिलिनियम 2 टैली पुरस्कार जीत चुका है। हमारी सामग्री डी.वी.डी, छपाई, इंटरनेट, उपग्रह द्वारा टेलीविज़न प्रसारण, रेडियो, और टेलीविज़न प्रसार का रूप लेते हैं।

हमारी सेवाओं की अधिक जानकारी के लिये एवं आप किस प्रकार इसमें सहयोग कर सकते हैं, आप हम से http://thirdmill.org पर मिल सकते हैं।

विषय-वस्तु सूची

पृष्ठ संख्या

१. परिचय 1
२. पृष्ठभूमि 1
क. लेखक 1
1. पारंपरिक दृष्टिकोण 2
2. व्यक्तिगत इतिहास 5
ख. अवसर 6
1. भौगोलिक स्थिति 6
2. श्रोता 7
3. तिथि 8
4. उद्देश्य 10
३. संरचना और विषयवस्तु 12
क. परिचय 12
ख. यीशु की सार्वजनिक सेवा 13
1. सेवकाई के लिए तैयारी 13
2. पहला फसह 15
3. बेनाम पर्व 17
4. दूसरा फसह 17
5. झोपड़ियों का पर्व 17
6. समर्पण का पर्व 18
7. तीसरा फसह 18
ग. यीशु की व्यक्तिगत सेवकाई 19
1. प्रभु-भोज 19
2. मृत्यु और पुनरुत्थान 22
घ. निष्कर्ष 25
४. मुख्य विषय 26
क. विश्वास करना 26
ख. मसीह 27
1. मंदिर 28
2. पर्व 30

3. व्यवस्था 31
ग. परमेश्वर का पुत्र 33
1. दैवीय 34
2. मानवीय 35
घ. जीवन 36
५. निष्कर्ष 38

सुसमाचार
अध्याय 5
यूहन्ना रचित सुसमाचार

परिचय

उसका नाम सोफिया है। यह उसका वास्तविक नाम नहीं है। यह वह नाम है जिसका प्रयोग वह अपने मित्रों और परिवारवालों से छिपाने के लिए करती है, जो इसलिए उसे जान से मारने की धमकी देते हैं क्योंकि वह अब यीशु में विश्वास करती है। सोफ़िया एक ऐसी पृष्ठभूमि से आती है जहाँ यीशु पर विश्वास करने पर सताव का सामना करना पड़ता है। दुनिया के कई भागों में ऐसा हो रहा है, और पहली सदी में भी ऐसा होता था। प्रेरित यूहन्ना के दिनों में यहूदी विश्वासियों को इसलिए आराधनालयों से बाहर खदेड़ दिया जाता था क्योंकि वे इस बात पर विश्वास करते थे कि यीशु उनके पूर्वजों से की गई परमेश्वर की प्राचीन प्रतिज्ञाओं की पूर्णता है। उन्हें उनके परिवारों, इतिहास और धर्म से अलग किया जा रहा था। यीशु ने सताव सह रहे इन विश्वासियों को आश्वस्त करने के लिए लिखा कि यीशु वास्तव में मसीह, अर्थात् परमेश्वर का पुत्र है। वह इस बात को निश्चित करना चाहता था कि उनकी कठोर परिस्थितियों के बीच वे यीशु के प्रति विश्वासयोग्य बने रहें और उसमें बहुतायत के जीवन का आनंद उठा सकें।

हमारी श्रंखला *सुसमाचारों* का यह पांचवां अध्याय है। इस श्रंखला में हम बाइबल की उन चार पुस्तकों का अध्ययन कर रहे हैं जो हमें बताती हैं कि यीशु पृथ्वी के इतिहास में किस प्रकार परमेश्वर के राज्य और इतिहास को लेकर आया। इस अध्याय का शीर्षक है, "यूहन्ना रचित सुसमाचार"। इस अध्याय में हम यूहन्ना के सुसमाचार का इस प्रकार अध्ययन करेंगे जो हमें और अधिक समझ के साथ इसे पढने, और अधिक गहराई से परमेश्वर से प्रेम करने और मसीह में हमारे जीवनों का और अधिक आनंद उठाने में सहायता करेगा।

हमारे अध्याय में हम तीन महत्वपूर्ण रूपों में यूहन्ना के सुसमाचार का अध्ययन करेंगे। पहला, हम यूहन्ना के सुसमाचार की पृष्ठभूमि का अध्ययन करेंगे। दूसरा, हम यूहन्ना के सुसमाचार की संरचना और विषयवस्तु का अध्ययन करेंगे। तीसरा, हम यूहन्ना के सुसमाचार के मुख्य विषयों पर ध्यान देंगे। हम यूहन्ना के सुसमाचार की पृष्ठभूमि के अध्ययन के साथ आरंभ करेंगे।

पृष्ठभूमि

हम लेखक और लेखन के अवसर पर ध्यान देने के द्वारा यूहन्ना के सुसमाचार की पृष्ठभूमि का अध्ययन करेंगे। आइए यूहन्ना के सुसमाचार के लेखक के साथ आरंभ करें।

लेखक

संपूर्ण कलीसिया इतिहास में, मसीहियों ने नियमित रूप से इस सुसमाचार को यीशु के चेले यूहन्ना के साथ जोड़ा है जो याकूब का भाई और जब्दी का पुत्र था। यूहन्ना यीशु के आंतरिक दायरे के सबसे विश्वस्त साथियों में से एक था, और आरंभिक मसीही समुदाय में विश्वास का स्तम्भ था। नए नियम के उसके लेखन में

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें- http://thirdmill.org

केवल चौथा सुसमाचार ही नहीं है, बल्कि उसने यूहन्ना की पहली, दूसरी और तीसरी पत्री एवं प्रकाशितवाक्य भी लिखा है।

हम यूहन्ना के सुसमाचार के लेखक का अध्ययन दो चरणों में करेंगे। पहला, हम यह देखेंगे कि पारंपरिक दृष्टिकोण कि प्रेरित यूहन्ना ने इस सुसमाचार को लिखा है, विश्वसनीय है। और दूसरा, हम यूहन्ना के व्यक्तिगत इतिहास का अध्ययन करेंगे। आइए, इस पारंपरिक दृष्टिकोण को देखते हुए आरंभ करें कि प्रेरित यूहन्ना चौथे सुसमाचार का लेखक था।

पारंपरिक दृष्टिकोण

> **यूहन्ना का सुसमाचार बाइबल की एक ऐसी पुस्तक है जो नहीं बताती कि उसका लेखक कौन है। और मैं सोचता हूँ कि हम वहीँ से शुरू करते हैं। बाइबल पर विश्वास करनेवाले मसीहियों के रूप में हम इस बात को मान लेते हैं कि हमारे पास ऐसा एक निश्चित कथन नहीं है कि इस पुस्तक को किसने लिखा है। दूसरी सदी तक, तरतुलियन और आयरेनियस और कुछ अन्य ने इस पुस्तक को प्रेरित यूहन्ना के साथ जोड़ा था। अतः आपको यह प्रश्न पूछना है कि उन्होंने इतनी मजबूती से इस बात को क्यों माना जब वे उस समय के इतना करीब थे कि या तो कुछ जीवित प्रेरितों के साथ उनका संपर्क था या फिर उनकी अगली पीढ़ी के साथ। तब आप सुसमाचार के अन्दर जाते हैं। आपको पुस्तक के आंतरिक प्रमाणों को देखना है, और वहां निःसंदेह आपको आँखोंदेखे विवरण मिलते हैं कि जो कोई भी इस पुस्तक को लिख रहा है वह उस कहानी को लिख रहा है जिसमें वह स्वयं भी उपस्थित था। उदाहरण के तौर पर, प्रभु-भोज में वह व्यक्ति मेज पर है, प्रिय चेला यीशु के साथ मेज पर है और वह एक बहुत महत्वपूर्ण बात है।**
>
> **डॉ. स्टीव हार्पर**

हम तीन प्रकार के आरंभिक प्रमाणों के कारण पुष्टि कर सकते हैं कि यूहन्ना ने संभवतः चौथे सुसमाचार को लिखा है।

हस्तलेख- चौथे सुसमाचार के अनेक प्राचीन हस्तलेख यूहन्ना का नाम लेखक के रूप में दर्शाती हैं। उदाहरण के तौर पर, *पपीरस 66* और *पपीरस 75*, जिनकी तिथि लगभग 200 ईस्वी के आस-पास है, सुसमाचार को *इयुएंगेलिओन काटा योनेन*, अर्थात् “यूहन्ना रचित सुसमाचार” कहते हैं। और *कोडेक्स सिनाईटिकस* एवं *कोडेक्स वेटिकानस*, जो चौथी सदी के मध्य में लिखे गए, इसे *काटा योनेन*, अर्थात् “यूहन्ना रचित” कहते हैं।

निःसंदेह यूहन्ना कोई असामान्य नाम नहीं था। परंतु आरंभिक कलीसिया के लेखनों से स्पष्ट है कि यह उस सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति “यूहन्ना” के विषय में ही था जिसका उल्लेख पवित्रशास्त्र में हुआ है, अर्थात् प्रेरित यूहन्ना।

केवल प्राचीन हस्तलेख ही नहीं दर्शाते कि यूहन्ना ने चौथा सुसमाचार लिखा है, परंतु सुसमाचार के आंतरिक प्रमाण भी इस निष्कर्ष की ओर अगुवाई करते हैं कि संभवतः यूहन्ना ही इसका लेखक है।

आंतरिक प्रमाण- सुसमाचार के लेखक ने यहूदी व्यवस्था के कुछ बिन्दुओं पर यीशु और यहूदी अगुवों के बीच वाद-विवाद को प्रस्तुत किया है। ये वाद-विवाद दर्शाते हैं कि लेखक यहूदी व्यवस्था का वैसा ही ज्ञान था जैसा एक फिलिस्तीनी यहूदी होने के रूप में प्रेरित यूहन्ना के पास होना चाहिए था।

एक कदम और आगे बढ़ें तो एक मजबूत प्रमाण है कि इस सुसमाचार का लेखक वास्तव में एक फिलिस्तीनी यहूदी था। सुसमाचार का फिलिस्तीनी चरित्र यीशु की सेवकाई के विवरणों में दिखाई देता है। उदाहरण के तौर पर, 7:15 में उसने फिलिस्तीनी यहूदी अगुवों की दृष्टि में धार्मिक प्रशिक्षण के महत्व को दर्शाया है।

चौथे सुसमाचार के लेखक ने ऐसे धार्मिक विषयों और शब्दों का उल्लेख किया है जो पहली सदी के फिलिस्तीनी यहूदी धर्म के समान थे। उदाहरण के तौर पर, कई विद्वानों ने यूहन्ना और कुमरान के लेखनों, जिसे मृत सागर प्रपत्र भी कहते है, के बीच समानता को भी दर्शाया है। उदाहरण के तौर पर, “ज्योति की संतान” की अभिव्यक्ति कुमरान के लेखनों और यूहन्ना 12:36 दोनों में पाई जाती है। और “जीवन की ज्योति” वाक्यांश भी कुमरान के लेखनों और यूहन्ना 18:12 दोनों में पाया जाता है। इस प्रकार की समानताएं दर्शाती हैं कि चौथे सुसमाचार का लेखक पहली सदी के फिलिस्तीन के धार्मिक वार्तालाप से पूरी तरह अवगत था।

सुसमाचार का लेख हमें न केवल यह भाव देता है कि यह एक फिलिस्तीनी यहूदी के द्वारा लिखा गया है, बल्कि यह भाव भी देता कि यह एक ऐसे व्यक्ति के द्वारा लिखा गया है जिसने यह सब अपनी आँखों से देखा हो। यह प्रेरित यूहन्ना की ओर संकेत करता है, क्योंकि उसने स्वयं यीशु के जीवन को अपनी आँखों से देखा था। हम इस बात का प्रमाण देखते हैं कि कई स्थानों पर लेखक स्वयं उपस्थित था। उदाहरण के तौर पर, यीशु की मृत्यु के बाद, यूहन्ना 19:35 यह कहता है :

> **जिसने यह देखा, उसने गवाही दी है, और उसकी गवाही सच्ची है; और वह जानता है कि वह सच कहता है कि तुम भी विश्वास करो। (यूहन्ना 19:35)**

यहाँ लेखक ने स्पष्ट रूप से बताया कि वह यीशु की मृत्यु का गवाह था। और हम ऐसा ही एक दावा यूहन्ना 21:20-24 में पाते हैं, जो इस गवाह को यह संबोधित करते हुए पहचानता है “वह चेला जिसे यीशु प्रेम करता था”। इससे यह स्पष्ट होता है कि लेखक का यीशु के साथ एक घनिष्ठ व्यक्तिगत संबंध था।

> **सोचें यूहन्ना ने अंतिम भोज के समय कैसा अनुभव किया होगा जब उसने अपना सिर यीशु की छाती पर रखा। उस घनिष्ठता के बारे में सोचें जो इन दो मनुष्यों के बीच होनी ही थी। और उस क्रूस पर भी जब यीशु मर रहा था, वह अपनी माता को संभालने की जिम्मेदारी अपने भाइयों या बहनों को नहीं परंतु प्रेरित यूहन्ना को देता है। पुनः, उन दो मनुष्यों के बीच एक गहरा, घनिष्ठ संबंध होना अवश्य था। और यूहन्ना के अपने विवरण में भी, हठीलेपन या घमंड के साथ नहीं, यूहन्ना स्वयं को ऐसे चेले के रूप में दर्शाता है जिससे यीशु प्रेम करता था।**
>
> **रेव्ह. थाड जेम्स**

“चेला जिसे यीशु प्रेम करता था” का उल्लेख यूहन्ना के सुसमाचार में बहुत बार पाया जाता है। उदाहरण के तौर पर, यूहन्ना 13:23 के अनुसार प्रिय चेला अंतिम भोज के समय यीशु के साथ बैठा है। 19:26-27 में यीशु ने क्रूस से इस प्रिय चेले से बात की और अपनी माता को सँभालने की जिम्मेदारी उसे दी। यही चेला

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें- http://thirdmill.org

20:2-8 में पुनरुत्थान की भोर को पतरस के साथ कब्र की ओर दौड़ा था। और 21:7-8 में प्रिय चेले ने यीशु को किनारे पर सबसे पहले पहचाना था।

> **यूहन्ना का उल्लेख नाम के साथ सुसमाचार में कभी नहीं किया गया कि उसने इसे लिखा है क्योंकि वह चाहता था कि वह इस रूप में पहचाना जाए जिसको यीशु प्रेम करता है। और ऐसा करने में वह एक ओर काफी हद तक अपनी नम्रता को प्रकट करता है, और फिर दूसरी ओर अपने प्रभु के साथ संबंध के आनंद को प्रकट करता है। जब आप सुसमाचार को पढ़ते हैं तो इस रोचक बात को पाते हैं कि जहाँ वह अन्य सभी चेलों के नाम का उल्लेख करता है, वहीँ अपने नाम का उल्लेख नहीं करता है।**
>
> **रेव्ह. लैरी कोक्रेल**

सुसमाचार में एक भी बार नाम के साथ यूहन्ना का उल्लेख नहीं है। और यह अचम्भे की बात है कि एक व्यक्ति जिसका उल्लेख दूसरे सुसमाचारों में बार-बार किया गया है उसका इस सुसमाचार में एक भी बार नाम नहीं आता है। सबसे संभावित स्पष्टीकरण यही है कि यूहन्ना ही वह प्रिय चेला था जिसने सुसमाचार को लिखा, और उसने नम्रतावश अपने नाम का उल्लेख नहीं किया। इसकी अपेक्षा, उसने इस बात पर ध्यान दिया कि यदि उद्धारकर्त्ता का दैवीय प्रेम उसके लिए नहीं होता तो वह यीशु का अनुयायी कभी नहीं बन पाता।

केवल चौथा सुसमाचार ही नहीं है जो इस धारणा को समर्थन देता है कि यूहन्ना ही उसका लेखक है, बल्कि आरंभिक कलीसिया के लेखनों ने भी इस निष्कर्ष की पुष्टि की है।

आरंभिक कलीसिया- 170-190 ईस्वी तक इस धारणा की कलीसिया में पुष्टि हो चुकी थी कि चौथा सुसमाचार प्रेरित यूहन्ना के द्वारा लिखा गया था। सिकंदरिया के क्लेमेंट, तरतुलियन, और आयरेनियस सबने पुष्टि की थी कि जब्दी का पुत्र यूहन्ना ही उसका लेखक था। 325 ईस्वी के लगभग कलीसियाई इतिहासकार यूसेबियस ने अपनी पुस्तक *ऐकलेसियास्टिकल हिस्ट्री,* पुस्तक 5, अध्याय 8, खंड 4 में आयरेनियस से लिया यह उद्धृण प्रस्तुत किया है :

> **तब यूहन्ना ने, जो प्रभु का चेला था और उसकी छाती से लगा था, भी सुसमाचार प्रदान किया जब वह एशिया के इफिसुस में रह रहा था।**

आयरेनियस की गवाही कम से कम दो कारणों से विशेष महत्व रखती है। पहला, यूसेबियस के अनुसार आयरेनियस स्मुरना के बिशप पोलीकार्प का चेला रहा था। और उनके बिशप की शहादत के विषय में स्मुरना की कलीसिया के एक पत्र के अनुसार स्वयं पोलीकार्प प्रेरित यूहन्ना का चेला रहा था। अतः आयरेनियस ने यूहन्ना के लेखक होने की जानकारी किसी ऐसे विश्वस्त व्यक्ति से प्राप्त की होगी जो यूहन्ना को व्यक्तिगत रूप से जानता हो। दूसरा, आयरेनियस ने प्राचीन कलीसिया में बहुत भ्रमण किया था और इसलिए उसे सब प्रकार की जानकारी थी जिसने चौथे सुसमाचार के लेखक की उसकी समझ को और अधिक विकसित किया होगा।

यह भी महत्वपूर्ण है कि यूहन्ना के लेखक होने के प्रति कोई विरोध भी नहीं था। प्राचीन कलीसिया के लेखनों में कहीं भी जब्दी के पुत्र यूहन्ना की अपेक्षा किसी और के लेखक होने का सुझाव नहीं दिया गया है। वास्तव में, इतिहास केवल ऐसे दो समूहों का उल्लेख करता है जिन्होंने यूहन्ना के सुसमाचार का विरोध किया

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें- http://thirdmill.org

था- वे हैं अलोगोई और मार्शियनवादी। यद्यपि उन्होंने यूहन्ना के सुसमाचार की शिक्षाओं को ठुकराया, फिर भी यह पूरी तरह से स्पष्ट नहीं है कि उन्होंने उसके लेखक होने का भी विरोध किया था।

यद्यपि बिना संदेह के यह प्रमाणित करना संभव नहीं है कि यह बेनाम सुसमाचार यूहन्ना के द्वारा लिखा गया है, फिर भी विश्वस्त धारणा यही पारंपरिक विचार है कि प्रेरित यूहन्ना ही इसका लेखक है।

यहाँ पर हम इस पारंपरिक दृष्टिकोण को देख चुके हैं कि यूहन्ना ने चौथे सुसमाचार को लिखा है, और यह भी देख चुके हैं कि यही सर्वमान्य है, इसलिए आइए अब हम यूहन्ना के व्यक्तिगत इतिहास को देखें।

व्यक्तिगत इतिहास

वास्तव में हम यीशु के किसी अन्य चेले से अधिक यूहन्ना के बारे में जानते हैं। यूहन्ना का उल्लेख सुसमाचार में उसके भाई याकूब के साथ "जब्दी के पुत्रों" के रूप में किया गया है। यूहन्ना का उल्लेख यह दर्शाते हुए याकूब के बाद किया गया है कि वह दोनों भाइयों में से छोटा है। मरकुस 1:14-21 के अनुसार मछली पकड़ने का पारिवारिक व्यवसाय कफरनहूम के निकट गलील की झील पर था। पद 20 के अनुसार व्यापार इतना बड़ा था कि दूसरों को भी काम पर रखा गया था। यूहन्ना 21:1-14 के अनुसार यीशु की मृत्यु के बाद भी व्यवसाय इतना मजबूत था कि वे इसमें लौट सकते थे।

मरकुस 15:40 और मत्ती 27:56 की तुलना दर्शाती है कि उनकी माता का नाम सलोमी था और कि कम से कम कुछ समय उसने भी यीशु का अनुसरण किया था। मत्ती 20:21 के अनुसार उसने एक बार यीशु से अपने पुत्रों के लिए राज्य में प्रमुख स्थान की मांग की थी। एक कदम और आगे बढ़ते हुए, यूहन्ना 19:25 और मत्ती 27:56 की तुलना यह दर्शा सकती है कि जब्दी के पुत्रों की माता सलोमी वास्तव में यीशु की माता मरियम की बहन थी। इससे यूहन्ना यीशु का मौसेरा भाई बन गया। यदि यह सत्य है तो इससे यह स्पष्ट होता है कि यीशु ने यूहन्ना 19:25-27 में क्रूस से यूहन्ना को अपनी माता की देखभाल करने के लिए क्यों कहा था।

मरकुस 3:17 में याकूब और यूहन्ना को "गर्जन के पुत्र" कहा गया था। यह शायद उनके उग्र स्वभाव का उल्लेख है। एक उदाहरण के तौर पर लूका ने एक अवसर का वर्णन किया जब यीशु ने सामरिया के एक नगर में रात गुजारने का स्थान ढूँढने का प्रयास किया था। जब वहां के निवासियों ने यीशु और उसके चेलों को वहां रुकने की अनुमति देने से इनकार कर दिया तो याकूब और यूहन्ना ने बड़े क्रोध के साथ प्रत्युत्तर दिया था। लूका 9:54-56 को सुनें :

> **यह देखकर उसके चेले याकूब और यूहन्ना ने कहा, "हे प्रभु, क्या तू चाहता है कि हम आज्ञा दें कि आकाश से आग गिरकर उन्हें भस्म कर दे?" परंतु उसने फिरकर उन्हें डांटा . . . और वे किसी दूसरे गाँव में चले गए। (लूका 9:54-56)**

ऐसा प्रतीत होता है कि यीशु के साथ उसके समय के दौरान यूहन्ना की भावनाएं सतह के करीब थीं और फूटने पर थीं। यह चकित करने वाली बात है कि वह अंत में नए नियम का ऐसा लेखक बन गया जिसने दूसरों से अधिक परमेश्वर के प्रेम और परमेश्वर के लोगों के प्रेम पर ध्यान केन्द्रित किया।

कुछ आलोचकों ने यह सोचा है कि चौथे सुसमाचार की करुणामय प्रकृति दूसरे सुसमाचारों में दिए गए यूहन्ना के चित्रण के विरोधाभासी है। परंतु दो विचार इसे स्पष्ट करते हैं कि कोई विरोधाभास नहीं है। पहला, यूहन्ना की कहानी परमेश्वर के प्रेम के द्वारा परिवर्तित व्यक्ति की कहानी है। यीशु के द्वारा प्रेम किए जाने ने यूहन्ना को प्रेम के प्रेरित में परिवर्तित कर दिया। दूसरा, जब परमेश्वर ने उग्र और भावनात्मक यूहन्ना को बदला

तो उसने यूहन्ना को असंवेदी मनुष्य नहीं बना दिया था। उसने उसे प्रेम के सुसमाचार के अतिसंवेदी प्रचारक में बदल दिया। परमेश्वर ने उसे पुनः निर्देशित किया और उसके अस्तित्व के केंद्र का प्रयोग किया, परंतु उस केंद्र को निकाल नहीं दिया।

सुसमाचारों के विवरणों में यूहन्ना, पतरस और याकूब के साथ चेलों के आंतरिक घेरे का सदस्य था। केवल वे ही यीशु के साथ उसके रूपांतरण और उसकी गिरफ़्तारी की रात गतसमनी में उसकी प्रार्थनाओं जैसे महत्वपूर्ण समयों में उसके साथ थे। प्रेरितों के काम में पतरस और यूहन्ना दोनों चेलों के अगुवे थे। और गलातियों 2:9 में पौलुस ने यूहन्ना को यरूशलेम की कलीसिया के एक स्तम्भ के रूप में कहा।

आरंभिक कलीसिया में आयरेनियस और अन्य कई स्त्रोतों ने यूहन्ना के यरूशलेम छोड़ने के बाद इफिसुस में एक लम्बी सेवकाई का वर्णन किया है। एक ऐसी मजबूत परंपरा भी है कि अंत में यूहन्ना को पतमोस नामक टापू पर बंधुआई में भी भेज दिया था। कुछ स्त्रोतों के अनुसार बाद में उसे बंधुआई से छोड़ दिया गया और वह इफिसुस को लौट आया, और वहां सम्राट ट्राजन के दौरान पहली सदी के अंत के निकट मर गया।

हमने यहाँ पर इस पारंपरिक दृष्टिकोण की पुष्टि कर ली है कि यूहन्ना ने चौथा सुसमाचार लिखा है, और यूहन्ना के संक्षिप्त व्यक्तिगत इतिहास से भी परिचित हो गए हैं, तो आइए अब यूहन्ना के सुसमाचार के लेखन के अवसर का अध्ययन करें।

अवसर

हम चार रूपों में यूहन्ना के सुसमाचार के लेखन के अवसर का अध्ययन करेंगे। पहला, हम श्रोताओं और लेखक दोनों की भौगोलिक स्थिति का अध्ययन करेंगे। दूसरा, हम मूल श्रोताओं की पहचान पर थोड़ा और निकटता से ध्यान देंगे। तीसरा, हम लेखन की तिथि पर ध्यान देंगे। और चौथा, हम सुसमाचार के उद्देश्य के बारे में सोचेंगे। आइए, यूहन्ना के सुसमाचार की भौगोलिक स्थिति को देखने के द्वारा आरंभ करें।

भौगोलिक स्थिति

संभावना यह है कि यूहन्ना ने यह सुसमाचार तब लिखा जब वह इफिसुस में था, और उसने यह उन श्रोताओं के लिए लिखा जो फिलिस्तीन से बाहर रहते थे, शायद एशिया माइनर में। हमें इन बातों की सटीक जानकारी प्राप्त नहीं हो सकती, परंतु ऐसे कई तथ्य हैं जो इन निष्कर्षों का समर्थन करते हैं। उदाहरण के तौर पर, फिलिस्तीनी यहूदी रीतियों के विषय में यूहन्ना की टिप्पणियां ऐसे श्रोताओं की ओर संकेत करती हैं जो फिलिस्तीन से बाहर रहते थे। सुनिए यूहन्ना 4:9 में यूहन्ना ने क्या लिखा :

> **उस सामरी स्त्री ने उससे कहा "तू यहूदी होकर मुझ सामरी स्त्री से पानी क्यों मांगता है"। (क्योंकि यहूदी सामरियों के साथ किसी प्रकार का व्यवहार नहीं रखते।) (यूहन्ना 4:9)**

इस पद में यूहन्ना ने यहूदियों और सामरियों के बीच पाई जाने वाली शत्रुता के विषय में अपने पाठकों के लिए एक टिप्पणी दी है। इस शत्रुता के बारे में फलिस्तीन के सब लोग अवगत थे, अतः यूहन्ना की टिप्पणी दर्शाती है कि उसके पाठक कहीं और रहते थे।

प्राचीन कलीसिया के लेखन भी सुझाव देते हैं कि यह सुसमाचार प्राथमिक रूप से फिलिस्तीन के बाहर के लोगों के लिए लिखा गया था। इससे पहले हमने यूसेबियस के लेख को देखा था जिसने आयरेनियस के कथन को उद्धृत किया था कि यूहन्ना ने यह सुसमाचार एशिया माइनर के इफिसुस में लिखा था। आयरेनियस, पोलीक्रेटेस, सिकंदरिया के क्लेमेंट और जस्टिन मार्टियर सहित लगभग सारी प्राचीन कलीसिया इस निष्कर्ष से

सहमत थी। इससे बढ़कर, किसी भी प्राचीन स्त्रोत ने कभी यह सुझाव नहीं दिया कि एशिया माइनर के निवासियों के अपेक्षा किसी अन्य समूह के लिए इसे लिखा गया था।

यूहन्ना के सुसमाचार और प्रकाशितवाक्य में एक घनिष्ठ संबंध भी पाया जाता है। प्रकाशितवाक्य वाक्य की पुस्तक यूहन्ना ने लिखी थी, और उसके श्रोता निश्चित रूप से एशिया माइनर के थे- प्रकाशितवाक्य अध्याय 2-3 में संबोधित सभी सातों कलीसियाएं एशिया माइनर की हैं। और सुसमाचार एवं प्रकाशितवाक्य के स्पष्ट समानताएं समान श्रोताओं की मजबूत संभावना को दर्शाती हैं। उदाहरण के तौर पर, यूहन्ना के सुसमाचार में मसीहियत में आए लोगों और यहूदी अराधनालयों के बीच के संघर्ष से संबंधित शिक्षाओं की एक महत्वपूर्ण कड़ी पाई जाती है। और प्रकाशितवाक्य की पुस्तक भी इस समस्या को दर्शाती है। सुनिए प्रकाशितवाक्य 2:9 और 3:9 में प्रभु ने अपनी कलीसिया से क्या कहा :

> **जो लोग अपने आप को यहूदी कहते हैं, और हैं नहीं, पर शैतान की सभा हैं, उनकी निंदा को भी जानता हूँ . . . मैं शैतान के उन सभावालों को तेरे वश में कर दूंगा जो यहूदी बन बैठे हैं, पर हैं नहीं वरन् झूठ बोलते हैं- देख मैं ऐसा करूँगा कि वे आकर तेरे पैरों पर गिरेंगे, और यह जान लेंगे कि मैंने तुझसे प्रेम रखा है। (प्रकाशितवाक्य 2:9 और 3:9)**

एक दूसरे दृष्टिकोण से, हम प्रेरितों के काम 19:1-7 से जानते हैं कि यूहन्ना बप्तिस्मादाता के अनुयायी कम से कम उस समय तक इफिसुस में थे। यदि प्रेरित यूहन्ना ने ऐसे श्रोताओं के लिए लिखा जिसमें यूहन्ना बप्तिस्मादाता के अनुयायी भी शामिल थे, तो यह सुसमाचार के स्पष्ट महत्व का वर्णन करता है कि यूहन्ना बप्तिस्मादाता ने स्वयं को यीशु के अधीन कर दिया था।

यद्यपि इस विषय में निश्चय के साथ कहना असंभव है, फिर भी ऐसा प्रतीत होता है कि जब यूहन्ना ने अपना सुसमाचार लिखा तो वह इफिसुस में था और एशिया माइनर की परिस्थितयों ने इसे आंशिक रूप से ढाला था।

हमने यहाँ पर यह दर्शा दिया है कि सुसमाचार के लिखे जाने का सबसे संभावित स्थान इफिसुस था, इसलिए आइए अब उन मूल श्रोताओं की प्रकृति को ध्यान से देखें जिनके लिए यूहन्ना ने इसे लिखा था।

श्रोता

सभी सुसमाचारों के समान यह भाव भी है कि यूहन्ना का सुसमाचार हर समय की संपूर्ण कलीसिया के लिए था। परमेश्वर के सभी लोगों के लिए इसका असीम महत्व है। परंतु यूहन्ना के सुसमाचार में ऐसे भाग भी हैं जो किसी विशेष स्थान और समय की कलीसिया के साथ ख़ास प्रासंगिकता को रखते प्रतीत होते हैं। सुसमाचार के कुछ भागों में ऐसा प्रतीत होता है कि यूहन्ना के मन में यहूदी समुदाय के ऐसे सदस्य थे जो यीशु के मसीहा होने पर विश्वास तो करते थे परंतु उन्होंने अराधनालयों में अराधना करना और यहूदी समुदाय के साथ संपर्क रखना जारी रखा था। वास्तव में, सुसमाचार का लगभग पूरा केन्द्रीय भाग, अध्याय 5 से लेकर 12 तक यीशु और यहूदियों के बीच हुए गहन संघर्ष को दिखाता है।

यूहन्ना द्वारा "यहूदियों" शब्द के प्रयोग से भी यह संघर्ष साफ़ दिखाई देता है, जिसका यूहन्ना ने 70 से भी अधिक बार प्रयोग किया, वहीँ शेष तीनों सुसमाचारों में कुल मिलाकर भी यह शब्द 20 बार से कम आता है। अधिकांश स्थानों पर यूहन्ना ने इस शब्द का प्रयोग उन धार्मिक अगुवों को दर्शाने के लिए किया जो यीशु के विरोध में थे।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें- http://thirdmill.org

इसके विपरीत जब यूहन्ना ने परमेश्वर के पुराने नियम के लोगों के बारे में सकारात्मक रूप से बात की तो उसने "इस्राएल" या "इस्राएलियों" जैसे शब्दों का प्रयोग किया। उदाहरण के तौर पर, यूहन्ना 1:47 में यीशु ने नतनएल को "सच्चा इस्राएली जिसमें कोई कपट नहीं" कहा।

यूहन्ना ने यूनानी शब्द ख्रिस्त (मसीह) का प्रयोग भी अन्य किसी भी सुसमाचार लेखक से अधिक किया। "ख्रिस्त" शब्द यूनानी शब्द "ख्रिस्तोस" और इब्रानी शब्द "मशीआह" दोनों का अनुवाद है, और दोनों का अर्थ है अभिषिक्त जन। मसीह परमेश्वर का छुटकारा देने वाला अभिषिक्त जन था जिसे इस्राएल को उनके पापों से बचाना था और बाहरी शासन से मुक्ति दिलाना था।

शब्द "मसीह" यहूदी मसीहियों के लिए विशेषकर महत्वपूर्ण था क्योंकि आराधनालय और बढती मसीही कलीसिया के बीच भिन्नता का केंद्र यह विश्वास था कि यीशु मसीह था, अर्थात् परमेश्वर के लोगों का बहु-प्रतीक्षित उद्धारकर्त्ता जिसकी भविष्यवाणी पुराने नियम में की गई थी।

यहूदी मसीहा की पहचान "मसीहा" शब्द के द्वारा बहुत बाद में हुई, परंतु स्त्री के उस वंश की प्रतिज्ञा उत्पत्ति 3:15 में ही कर दी गई थी जो बुराई- शैतान और उसके वंश- को पराजित करेगा। अतः आरंभ से ही स्त्री का वंश, इसे बाद में स्पष्ट किया गया कि वह अब्राहम का वंश भी होगा, और फिर यह स्पष्ट किया गया कि वह यहूदा का वंश भी होगा, और ये प्रतिज्ञाएँ, सांप से कि वह दंड का भागी होगा, और अब्राहम से कि उसके वंश से सभी जातियां आशीष पाएंगी, और फिर यहूदा से कि उसके पैरों से राजदंड कभी न छूटेगा। ये प्रतिज्ञाएं अंत में बालाम के कथनों में एकजुट होती हैं, और जो परमेश्वर की योजना आरम्भ से थी कि मसीहा बुराई को पराजित करेगा और अदन की वाटिका के मार्ग को पुनः खोलेगा और निर्जल भूमि को यहोवा की महिमा से ऐसे ढक देगा जैसे जल समुद्र को ढक देता है।

डॉ. जेम्स हैमिल्टन

यूहन्ना द्वारा संबोधित विषय और जिस प्रकार वह उन्हें संबोधित करता है, दर्शाता है कि उसके प्राथमिक श्रोता यहूदी मसीही थे जो मसीह के अनुयायी होने के कारण संघर्ष कर रहे थे। परंतु संपूर्ण पवित्रशास्त्र के समान पवित्र आत्मा का उद्देश्य यूहन्ना के सुसमाचार से भी यही था कि उसका प्रयोग हर समय की संपूर्ण कलीसिया के द्वारा हो। और वास्तव में, यूहन्ना 1:41 और 4:25 में यूहन्ना ने अपने श्रोताओं में पाए जाने वाले गैरयहूदी लोगों के लिए इब्रानी शब्द "मसीहा" का भी अनुवाद किया। और निःसंदेह इतिहास ने प्रमाणित कर दिया है कि यूहन्ना का सुसमाचार यहूदी और गैरयहूदी विश्वासियों के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

हमने यहाँ पर सुसमाचार के लिखे जाने के स्थान और श्रोता दोनों का अध्ययन कर लिया है, इसलिए आइए अब इसके लिखे जाने की तिथि पर ध्यान दें।

तिथि

सामान्य रूप में हम कह सकते हैं कि यूहन्ना ने शायद 85-90 ईस्वी के बीच सुसमाचार को लिखा था। बहुत से कारण दर्शाते हैं कि सुसमाचार 85 ईस्वी के बाद नहीं लिखा गया होगा। पहला, यूहन्ना ही एकमात्र सुसमाचार है जो यरूशलेम और मंदिर के उस विनाश की भविष्यवाणियों को शामिल नहीं करता है, जो 70 ईस्वी में हुआ था। यह शायद इसलिए था कि उस विनाशकारी घटना के बाद काफी समय बीत चुका था।

दूसरा, सुसमाचार ऐसे समय को दर्शाता है जब कलीसिया और आराधनालय के बीच तनाव बहुत अधिक था। यरूशलेम के पतन के बाद यहूदी धर्म बहुत कठोर बन गया। अपने को झूठी शिक्षा से बचाते हुए आराधनालय की प्रार्थनाओं में झूठे शिक्षकों पर एक श्राप को जोड़ दिया गया, ऐसे झूठे शिक्षक जो यीशु को परमेश्वर का पुत्र मानते थे; और इस प्रकार औपचारिक निष्कासन और अधिक होने लगे। यह तनाव यूहन्ना 9 जैसे अनुच्छेदों में दिखाई देता है, जहाँ यूहन्ना ने उस अंधे व्यक्ति के निष्कासन की सूचना दी जिसे यीशु ने चंगा किया था। यूहन्ना 9:22 में इस परिस्थिति पर यूहन्ना की टिपण्णी को सुनें :

> **यहूदी एकमत हो चुके थे कि यदि कोई कहे कि वह मसीह है, तो आराधनालय से निकाला जाए। (यूहन्ना 9:22)**

इस अनुच्छेद में आराधनालय से निकाल देने का अर्थ था निष्कासित कर देना, अर्थात् यहूदी समुदाय के जीवन से बाहर कर देना।

तीसरा, ऐसा प्रतीत होता है कि यूहन्ना का सुसमाचार अन्य तीनों सुसमाचारों के बाद लिखा गया था। यह दृष्टिकोण कम से कम चौथी सदी के इतिहासकार यूसेबियस से चला आ रहा है। उसके अनुसार यूहन्ना ने अपना सुसमाचार अन्य सुसमाचारों को पूरा करने के लिए लिखा था, विशेषकर यीशु की सेवकाई के बारे में उस जानकारी के द्वारा जो उसने यूहन्ना बप्तिस्मादाता की गिरफ्तारी से पहले की थी। सुनें कि *ऐक्लेसियास्टिकल हिस्ट्री,* पुस्तक 3, अध्याय 24, खंड 12 में यूसेबियस ने क्या लिखा था :

> **यूहन्ना अपने सुसमाचार में मसीह के उन कार्यों का वर्णन करता है जो बप्तिस्मादाता की गिरफ्तारी से पहले किए गए थे, परंतु अन्य तीन सुसमाचार प्रचारक उसके बाद की घटनाओं का उल्लेख करते हैं।**

> **जो भी चारों सुसमाचारों को पढता है वह उसी समय इस बात से चकित हो जाता है कि तीन सुसमाचार- मत्ती, मरकुस और लूका- एकसमान प्रतीत होते हैं; उनमें बहुत-सी समान कहानियां हैं और यीशु की सेवकाई के संबंध में समान आधारभूत संरचना है। तब चौथा सुसमाचार आता है, यूहन्ना का सुसमाचार, जो बिल्कुल अलग है। यूहन्ना का सुसमाचार पहली सदी के अंत में लिखा प्रतीत होता है, उस समय कलीसिया बाहरी दुनिया से अर्थात् अपने यहूदी विरोधियों से और अपने सांसारिक विरोधियों से, बहुत-सी नई चुनौतियों का सामना कर रही थी। और वो चुनौतियाँ निश्चित रूप से एक भाव में यीशु के व्यक्तित्व से जुड़ी थीं कि वह कौन था। यीशु के देवत्व पर स्पष्ट रूप से प्रश्न उठ रहे थे, क्योंकि यूहन्ना का सुसमाचार इस बात पर मजबूती से जोर देता है कि यीशु वास्तव में दैवीय है। समदर्शी सुसमाचारों में यह बड़ा विषय नहीं है क्योंकि वहां स्पष्ट रूप से उसे चुनौती नहीं दी गई थी। दूसरी बात यह है कि वहां कलीसिया में झूठी शिक्षा फ़ैल रही थी, इसलिए यूहन्ना का सुसमाचार झूठी शिक्षा के विषय को संबोधित करता प्रतीत होता है। तीसरी बात यह थी कि विरोधी यहूदी, उस समय यहूदियों और मसीहियों में बहुत संघर्ष चल रहा था, ऐसा संघर्ष जिसे हम मत्ती, मरकुस या लूका में स्पष्ट रूप से नहीं देख सकते।**
>
> **डॉ. मार्क स्ट्रॉस**

यह सब इस निष्कर्ष की ओर लेकर जाता है कि कलीसिया की प्राचीन परंपरा शायद सही थी और सुसमाचार यूहन्ना के जीवन के अंत में लिखा गया था, शायद 85 ईस्वी के बाद। यदि जब्दी का पुत्र यूहन्ना सुसमाचार का लेखक है तो यूहन्ना के सुसमाचार की संभावित तिथि उसके जीवन की अवधि के द्वारा निर्धारित की जाती है। जब यूहन्ना ने यीशु का अनुसरण करना आरंभ किया तब वह एक युवा व्यक्ति था, वह लगभग 30 ईस्वी का समय था। यदि यूहन्ना उस समय 15-20 वर्ष का भी हो तो भी 90 ईस्वी तक लगभग 90 वर्ष का होगा। उससे अधिक जीवित रहना शायद संदेह की बात हो।

85 या 90 ईस्वी सबसे संभावित तिथि है जब यूहन्ना ने यह सुसमाचार लिखा था और यह हस्तलेख के प्रमाण से भी मेल खाती है। नए नियम के किसी भी भाग को समाहित करने वाला सबसे पुराना हस्तलेख *पापीरस 52* है जिसे *रीलैंड्स पापीरस* भी कहते हैं। इसमें यूहन्ना 18 का एक भाग भी समाहित है।

पापीरस 52 की तिथि 100 से 150 ईस्वी के बीच है। यह मानते हुए कि यह छोटा भाग मूल रूप से पूरे सुसमाचार का हिस्सा था, यह दर्शाता है कि सुसमाचार काफी पहले लिखा जा चुका था और दूसरी सदी के आरंभिक भाग तक काफी फ़ैल चुका था। दूसरी सदी के अंतिम भाग के हस्तलेख भी मिले हैं। ये सभी हस्तलेख मिस्री हैं, और भिन्न हस्तलेख परंपराओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। यह संदेहास्पद है कि एशिया माइनर से मिस्र की ओर इस भौगोलिक स्थानांतरण, और हस्तलेख की परंपराओं की विविधता, में 40-50 वर्ष से कम लगे होंगे। अतः यूहन्ना के सुसमाचार के लिखे जाने की सबसे संभावित तिथि 90 या 100 ईस्वी रखना तर्कशील लगता है।

हमने यहाँ पर यूहन्ना के सुसमाचार के स्थान, श्रोताओं, और तिथि का अध्ययन कर लिया है, इसलिए आइए अपने सुसमाचार को लिखने में यूहन्ना के उद्देश्य पर ध्यान दें।

उद्देश्य

नए नियम की सभी बड़ी पुस्तकों में जटिल उद्देश्य पाए जाते हैं और यूहन्ना का सुसमाचार भी कोई अपवाद नहीं है। जिस प्रकार यीशु ने अपनी सेवकाई के दौरान अनेक विषयों को संबोधित किया, वैसे ही यीशु की सेवकाई के यूहन्ना के वर्णन भी कई विषयों को संबोधित करते हैं। परंतु फिर भी इन उद्देश्यों का एकीकृत रूप में वर्णन करना संभव है। वास्तव में, स्वयं यूहन्ना ने हमारे लिए इसके उद्देश्य का सार प्रस्तुत किया है। विशेष रूप से उसने कहा कि वह इस धारणा की पुष्टि करना चाहता था कि यीशु मसीह भी है और परमेश्वर का पुत्र भी। सुनिए उसने यूहन्ना 20:30-31 में क्या लिखा :

> **यीशु ने और भी बहुत से चिह्न चेलों के सामने दिखाए, जो इस पुस्तक में लिखे नहीं गए; परंतु ये इसलिए लिखे गए हैं कि तुम विश्वास करो कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है, और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ। (यूहन्ना 20:30-31)**

आम तौर पर, यूहन्ना ने इसलिए लिखा कि उसके श्रोता यह विश्वास कर लें कि यीशु मसीह है और परमेश्वर का पुत्र है, ताकि वे उस लाभ को प्राप्त करें जो इस सुसमाचार के संदेश पर विश्वास करने से प्राप्त होता है।

> **सुसमाचार के लिखे जाने के उद्देश्य के विषय में यूहन्ना काफी स्पष्ट है। यूहन्ना 20:31 में कहता है कि ये बातें इसलिए लिखी गईं कि हम जान सकें कि यीशु मसीह है और परमेश्वर का पुत्र है ताकि उस पर विश्वास करने से हमें उसमें अनंत जीवन मिले। अब यह उद्देश्य द्विरूपीय है, जो यहाँ बताया गया है। सबसे पहला, यह उसके सुसमाचार की सुसमाचार प्रचार करने की प्रकृति से संबंधित है। स्पष्ट रूप से, उसने इसलिए यह लिखा कि उसके पाठक किसी न किसी समय**

जब प्रभु उन्हें पास बुलाए तो वे उसमें अपने विश्वास को क्रियान्वित करें। दूसरा, यह चरित्र में विश्वास-रक्षी है। वह अपने पाठकों को इससे भी आश्वस्त करना चाहता था कि यीशु वास्तव में मनुष्य की देह धारण किया हुआ परमेश्वर है।

रेव्ह. लैरी कोक्रेल

यूहन्ना कह रहा है, मैं यह सुसमाचार इसलिए लिख रहा हूँ कि तुम यीशु की पहचान को जान लो। यीशु परमेश्वर का पुत्र है। और वह फिर स्पष्ट करता है कि परमेश्वर का पुत्र कौन है, वह वो शब्द है जो पिता के साथ था और मनुष्य बना, कि यीशु प्रतिज्ञा किया हुआ मसीहा है, और यह कोई संक्षिप्त जानकारी नहीं है जिसे हम स्वीकार करते हैं, परंतु वह यह कहता है, मैं चाहता हूँ कि तुम इस पर विश्वास के साथ निर्भरता रखो ताकि तुम्हें वह जीवन मिले जो पिता उसके द्वारा सेंत-मेंत में दे रहा है।

डॉ. रॉबर्ट प्लम्मर

इस पूरे सुसमाचार में यूहन्ना के उद्देश्य का मुख्य ध्यान मसीहा और परमेश्वर के पुत्र के रूप में यीशु पर विश्वास करने को बढ़ावा देना था। ये दो बिंदू थे जिन पर यहूदी मसीहियों को आराधनालय के साथ अपने संघर्ष में सहारे की आवश्यकता थी। वे यीशु पर मसीह और परमेश्वर के पुत्र के रूप में विश्वास करने लगे थे, और यदि उन्हें उद्धार की आशिषों को प्राप्त करना था तो उन्हें अपने इस विश्वास में निरंतर आगे बढ़ना था।

निःसंदेह एक ऐसा भाव भी है जिसमें यूहन्ना का सुसमाचार सब विश्वासियों के लिए है। उदाहरण के तौर पर, यूहन्ना 13-17 में यूहन्ना ने इस बात पर बल देने के द्वारा सब विश्वासियों के विश्वास को बढाने का प्रयास किया कि यद्यपि यीशु इस पृथ्वी पर नहीं है, फिर भी वह पवित्र आत्मा के द्वारा अपने लोगों के जीवनों में उपस्थित वास्तविकता है। यूहन्ना की समस्त शिक्षा सभी विश्वासियों के जीवनों को मजबूत करने के लिए थी।

विद्वानों ने कहा है कि यूहन्ना का सुसमाचार "वह तालाब है जिसे बच्चे पार करते हैं और हाथी तरते हैं।" इसका मूल संदेश स्पष्ट और सीधा है : यीशु, मसीह अर्थात् परमेश्वर का पुत्र है। परंतु इस मूल संदेश के विवरण उन व्याख्याकारों को निरंतर चुनौती प्रदान करते हैं जो वर्षों से इसका अध्ययन कर रहे हैं।

पहले मसीही जिन्होंने इस सुसमाचार को पढ़ा होगा वे उसके द्वारा बहुत उत्साहित हुए होंगे। इसने उन्हें अपने विरोधियों के साथ संघर्ष के बीच मसीही विश्वास में बने रहना सिखाया होगा। और इसने उन्हें उस मसीह के प्रति अपने प्रेम और सम्मान में भी प्रेरित किया होगा जो उनके बहुतायत के जीवन का एकमात्र स्त्रोत है। और यूहन्ना का सुसमाचार वैसा ही उत्साह और प्रेरणा आज के मसीहियों को भी प्रदान करता है।

यूहन्ना के सुसमाचार की पृष्ठभूमि का अध्ययन करने के बाद, आइए अब हम सुसमाचार की संरचना और विषयवस्तु की ओर मुड़ें।

संरचना और विषयवस्तु

विद्वानों ने यूहन्ना के सुसमाचार की संरचना का वर्णन कई रूपों में किया है। इस अध्याय में हम उनकी संरचना के अनुसार चलेंगे जिन्होंने यीशु के जीवन और सेवकाई के यूहन्ना के परिचयात्मक वर्णन और यूहन्ना की पुस्तक की विषय-वस्तु के बीच एक संबंध को दर्शाया है। यूहन्ना 1:10-14 से इन शब्दों को सुनें :

> **(यीशु) जगत में था, और जगत उसके द्वारा उत्पन्न हुआ, और जगत ने उसे नहीं पहचाना। वह अपने घर आया और उसके अपनों ने उसे ग्रहण नहीं किया। परंतु जितनों ने उसे ग्रहण किया, उसने उन्हें परमेश्वर की संतान होने का अधिकार दिया . . . उसने अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया, और हमने उसकी ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के एकलौते की महिमा। (यूहन्ना 1:10-14)**

यह अनुच्छेद चार मुख्य विचारों पर ध्यान देता है : यीशु इस जगत में आया; वह आया और अपने ही लोगों, अर्थात् इस्राएलियों द्वारा ठुकराया गया; जिन्होंने उसे स्वीकार किया और उस पर विश्वास किया वे परमेश्वर की संतान बन गए; और फिर वे विश्वासी यीशु के गवाह बन गए।

इन चार विचारों का अनुसरण करते हुए, हम यूहन्ना के सुसमाचार की रूपरेखा को इस प्रकार दर्शाएँगे:

- पहला, 1:1-18 में यूहन्ना ने यीशु के के देहधारण के एक संक्षिप्त परिचय के साथ सुसमाचार का आरंभ किया।
- दूसरा, 1:19-12:50 में यूहन्ना ने यीशु की सार्वजनिक सेवकाई का वर्णन किया जहाँ उसने दिखाया कि यीशु अपनी ही सृष्टि के पास आया और उसी मानवजाति के द्वारा ठुकराया गया जिसे वह बचाने आया था।
- तीसरा, 13:1-20:31 में यूहन्ना ने उनके प्रति यीशु की व्यक्तिगत सेवा का वर्णन किया जिन्होंने उसे स्वीकार किया और उस पर विश्वास किया।
- और चौथा, 21:1-25 में यूहन्ना के सुसमाचार के निष्कर्ष में यूहन्ना ने यीशु की महिमा के गवाहों के रूप में प्रेरितों और अन्य चेलों की भूमिका को दर्शाया।

हम परिचय से आरंभ करके यूहन्ना रचित सुसमाचार के इन सभी भागों पर ध्यान देंगे।

परिचय

1:1-18 में यूहन्ना ने प्रभावशाली और सुन्दर रूप से संपूर्ण सुसमाचार का सार प्रस्तुत किया। उसने सिखाया कि यीशु परमेश्वर का वह वचन है जिसने सब कुछ रचा है और जो सारे जीवन का स्त्रोत है। परंतु इससे बढ़कर, यीशु इस जगत में मांस और लहू के एक सच्चे मनुष्य के रूप में भी आया। और देहधारी परमेश्वर के रूप में उसने अपने द्वारा रचे संसार में पिता की महिमा को प्रकट किया।

यूहन्ना ने इसे यह कहते हुए यूहन्ना 1:4-5 में प्रकट किया कि यीशु वह ज्योति है जो अंधकार से भरे जगत में आई। उसने परमेश्वर के अनुग्रह के पूर्ण प्रकाशन के रूप में उस अंधकार पर विजय प्राप्त कर ली। और जहाँ बाइबल कभी-कभी देहधारण के समय यीशु की महिमा के छिपे होने की बात करती है, वहीँ यूहन्ना ने यह दर्शाया कि यीशु के देहधारण ने वास्तव में महत्वपूर्ण रूपों में उसकी महिमा को प्रकट किया। और यीशु की

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें- http://thirdmill.org

महिमा को धुंधला करने की अपेक्षा मनुष्य के रूप में उसके देह्धारण ने वास्तव में उसकी महिमा को प्रकट कर दिया। यूहन्ना ने यूहन्ना 1:14 में यह लिखा :

और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर . . . हमने उसकी ऐसी महिमा देखी, जैसे पिता के एकलौते की महिमा। (यूहन्ना 1:14)

यीशु की सार्वजनिक सेवा

परिचय के बाद यूहन्ना ने 1:19-12:50 में यीशु की सार्वजनिक सेवा का वर्णन किया। इस खंड में यूहन्ना ने इस बात पर ध्यान केन्द्रित किया कि यीशु अपने लोगों, अर्थात् इस्राएल राष्ट्र के पास आया और कि इस्राएल के लोगों ने यीशु को अपने मसीहा और प्रभु के रूप में ठुकरा दिया। जैसा कि हमने यूहन्ना 1:11 में देखा, यूहन्ना ने कहा कि

(यीशु) अपने घर आया और उसके अपनों ने उसे ग्रहण नहीं किया। (यूहन्ना 1:11)

यद्यपि इस सारांश के कुछ महत्वपूर्ण अपवाद हैं, फिर भी यूहन्ना के सुसमाचार में सामान्य रूप में इस्राएल राष्ट्र ने इसी प्रकार यीशु की सार्वजनिक सेवकाई का प्रत्युत्तर दिया।

यीशु की सार्वजनिक सेवा का हमारा सर्वेक्षण सात भागों में विभाजित होगा, जो सेवकाई के लिए उसकी तैयारी से आरंभ होकर छः भिन्न यहूदी त्योहारों से घिरी घटनाओं के साथ आगे बढेगा। आइए सबसे पहले यूहन्ना 1:19-2:12 में सेवकाई के लिए यीशु की तैयारी को पहले देखें।

सेवकाई के लिए तैयारी

सेवकाई के लिए यीशु कि तैयारी का खंड यूहन्ना 1:19-36 में यूहन्ना बप्तिस्मादाता की सेवकाई के साथ आरंभ होता है। इस अनुच्छेद में यूहन्ना ने बल दिया कि यूहन्ना बप्तिस्मादाता इस बात का महत्वपूर्ण गवाह था कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है और कि यीशु परमेश्वर का वह बलिदानी मेमना होगा जो संसार के पापों को उठा ले जाएगा।

इसके बाद 1:37-51 में यूहन्ना यीशु के पहले चेलों के बुलाए जाने का विवरण देता है। यूहन्ना बप्तिस्मादाता के विवरण के समान इस खंड में भी बल यीशु की पहचान पर है। पद 38 में उसके चेले उसे “रब्बी” कहते हैं, जिसका अर्थ है शिक्षक या गुरु; पद 41 में “मसीहा” कहते हैं जिसका अर्थ है मसीह; पद 45 में “जिसके बारे में मूसा ने लिखा था” कहते हैं जो भविष्यवक्ता मूसा की भविष्यवाणी का उल्लेख था; और पद 49 में “परमेश्वर का पुत्र” और इसके समानार्थी भाव “इस्राएल का राजा” कहते हैं। अंत में पद 51 में यीशु स्वयं को “मनुष्य का पुत्र” कहता है जो परमेश्वर की उपस्थिति को प्रदान करने के लिए भेजा गया है।

सेवकाई के लिए यीशु की तैयारी का अंतिम भाग उसका पहला चमत्कार था, जिसका विवरण यूहन्ना ने 2:1-12 में दिया है। यह वह अवसर था जब यीशु ने पानी को दाखरस में बदला। परंतु मुख्य ध्यान चमत्कार पर नहीं था। सुनिए यूहन्ना ने 2:11 में क्या लिखा :

यीशु ने गलील के काना में अपना ये पहला चिह्न दिखाकर अपनी महिमा प्रकट की और उसके चेलों ने उस पर विश्वास किया। (यूहन्ना 2:11)

एक मुख्य बात जो यूहन्ना ने कही वह यह थी कि यह चमत्कार एक चिह्न था जिसने यीशु की महिमा प्रकट की, और उससे उसके चेलों ने उस पर विश्वास किया।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें- http://thirdmill.org

"चिह्न" शब्द पहली बार निर्गमन की पुस्तक में उन चमत्कारों के लिए इस्तेमाल हुआ है जो मूसा ने किए, विशेषकर महामारियों के विषय में। इसलिए चिह्नों का या शब्द "चिह्न" का प्रयोग पहले से ही चमत्कारों के लिए किया जाता रहा है, और यह केवल यूहन्ना ही नहीं कर रहा है क्योंकि वह प्रायः यीशु की तुलना मूसा से करता है, और इसके साथ-साथ मैं सोचता हूँ कि वह भी निर्गमन की पुस्तक के लेखक के समान यह दिखाने में रुचि रखता है कि चमत्कार लोगों को कुछ दिखाने के लिए दिए गए हैं और वह सूचना देने के लिए भी जिन पर उन्हें कार्य करना था, विशेषकर यह कि परमेश्वर अपने लोगों से कुछ कह रहा है और लोगों को उसका प्रत्युत्तर देना है।

डॉ. डेविड रेडलिंग्स

सुसमाचारों में यूहन्ना ही केवल नियमित रूप से यीशु के चमत्कारों को *"सेमेइओन"* अर्थात् "चिह्न" कहता है। ये चमत्कार उनकी ओर ध्यान आकर्षित करने के लिए नहीं बल्कि उनसे बढ़कर यीशु की ओर संकेत करने के लिए किए गए थे। विशेष रूप से, वे यूहन्ना 20:30-31 में यूहन्ना द्वारा दर्शाए पुस्तक के उद्देश्य के समरूप यीशु को "मसीह" और "परमेश्वर के पुत्र" के रूप में पहचानने के लिए किए गए थे।

बहुत से लोगों ने यीशु के चमत्कारों से लाभ प्राप्त किया था, परंतु वास्तव में जिनकी आँखें खोली गईं थीं वे किसकी ओर संकेत कर रहे थे, अर्थात् मसीह की पहचान की ओर। और इसलिए मैं सोचता हूँ कि यूहन्ना ने ऐसे शब्द का इस्तेमाल किया जो चमत्कार के बारे में बताता है, न केवल बड़ी चमत्कारी घटनाओं के बारे में, बल्कि उनसे बढ़कर मसीह की पहचान की ओर संकेत करता है। और निःसंदेह यूहन्ना कहता है कि इसीलिए यह कहा गया है कि तुम विश्वास करो कि यीशु मसीह है और विश्वास करने के द्वारा तुम्हें उसके नाम में जीवन मिले और चिह्न कार्य के उस भाग को पूरा करते हैं।

डॉ. साइमन विबर्ट

चिह्न वह है जो यीशु दिखाता है और जो उसकी सच्ची पहचान की ओर संकेत करता है। और यदि आप उसे केवल एक आश्चर्यकर्म के समान देखते हैं तो आपने उसके संकेत को खो दिया है, फिर चाहे वह पानी को दाखरस में बदलना हो, चमत्कारी रूप से भीड़ को रोटी खिलाना हो, या अंधे व्यक्ति को चंगाई देना हो। संपूर्ण सुसमाचार में, यूहन्ना देखता है कि वे केवल आश्चर्यकर्म ही नहीं हैं, बल्कि वे कार्य हैं जिन्हें यदि आप परमेश्वर की इच्छा के अनुसार देखते हैं तो यीशु की पहचान के संपूर्ण प्रकाशन को देख पाएँगे : वह जीवन की रोटी है, वह वो है जो हमें दृष्टि देने के लिए आया; वह आने वाले युग की नई दाखरस लाता है और हम उसका आनंद उठाते हैं।

डॉ. रोबर्ट प्लम्मर

पहला फसह

यीशु की सार्वजनिक सेवकाई से संबंधित दूसरा खंड यरूशलेम में फसह के पर्व के इर्द-गिर्द घूमता है। हम इसे पहला फसह कहेंगे क्योंकि यूहन्ना के सुसमाचार में यह पहला है जिसका नाम लिया गया है। यह खंड यूहन्ना 2:13-4:54 में पाया जाता है।

यह खंड यूहन्ना 2:13-25 में बेचने वालों को मंदिर से बाहर खदेड़ने के द्वारा यीशु के मंदिर को साफ करने के यूहन्ना के वर्णन के साथ आरंभ होता है। और एक बार फिर ध्यान यीशु की पहचान पर था। सुनिए यहूदियों ने यूहन्ना 2:18 में यीशु से क्या पूछा :

> **इस पर यहूदियों ने उससे कहा, "तू जो यह करता है तो हमें कौन-सा चिह्न दिखाता है?"(यूहन्ना 2:18)**

यीशु ने अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान की भविष्यवाणी करते हुए उत्तर दिया, जो उसकी सेवकाई का सबसे बड़ा चिह्न होगा कि वह परमेश्वर का पुत्र है।

इन विवरणों के बाद 2:21-25 में पाई जाने वाली अपनी टिप्पणियों में यूहन्ना ने बताया कि यीशु ने और भी कई चिह्न दिखाए थे, और उसके फलस्वरूप सतही रूप से ही सही बहुत से लोगों ने उसके नाम पर विश्वास किया था।

फिर यूहन्ना ने 3:1-21 में यहूदी महासभा के एक सदस्य निकुदिमस के साथ यीशु के एक अद्‌भुत वार्तालाप का वर्णन किया। और पुनः बल यीशु की पहचान पर ही था, इस बार "मनुष्य के पुत्र" और "परमेश्वर के पुत्र" के रूप में था, और उद्धार के उस कार्य पर था जिसे करने के लिए उसे भेजा गया था।

यूहन्ना 3:22-36 में हम यूहन्ना बप्तिस्मादाता के एक अन्य विवरण को पाते हैं। इसमें यूहन्ना ने बल दिया कि यीशु मसीह, अर्थात् परमेश्वर का पुत्र है। और उसने कहा कि यीशु परमेश्वर और उद्धार के बारे में गवाही देने के लिए आया, परंतु कोई भी विश्वास के साथ उसे ग्रहण नहीं कर रहा था।

यूहन्ना 4:1-42 में यूहन्ना ने सामरिया में एक कुँए पर एक सामरी स्त्री के साथ यीशु की भेंट का वर्णन किया। एक बार फिर, बल मसीहा के रूप में यीशु की पहचान पर था, वह मसीहा जो अपने लोगों को आकर सब बातें स्पष्ट करेगा। इस बात पर बल देते हुए कि उद्धार यहूदियों के द्वारा, विशेषकर उसके स्वयं के द्वारा आयेगा, यीशु ने उसके सोचने के तरीके को चुनौती दी और उसे बुलाया कि वह उसमें उस जीवन और परमेश्वर की वास्तविकता को पाए जिसे वह सदा से चाहती थी। और कई सामरियों ने यीशु में विश्वास करने के द्वारा इस शिक्षा को ग्रहण किया।

अंत में, यूहन्ना 4:43-54 में यूहन्ना ने यीशु के दूसरे चमत्कारी चिह्न का वर्णन किया। पहले चिह्न के समान यह भी काना नगर में हुआ। परंतु इस बार यीशु ने बिना छुए या देखे एक बालक को चंगा किया। और कोई आश्चर्य की बात नहीं कि इस कहानी में बल इस बात पर है कि चमत्कार यीशु के अधिकार को दर्शाने के लिए था, और इससे उन सबने विश्वास किया जिन्होंने इसे देखा था।

पहले फसह के खंड में जो महत्वपूर्ण विषय बार-बार पाया जाता है वह है विश्वास। यूहन्ना ने 2:11 में बताया कि चिह्न दिखाने के बाद चेलों ने यीशु पर विश्वास किया। 4;42 में सामरियों ने यीशु की शिक्षा के कारण विश्वास किया। 4:53 में चंगा किए गए लड़के के परिवार ने विश्वास किया। बाद में, यूहन्ना 7:50 और 19:39 में हमें यह सोचने का कारण मिलता है कि निकुदिमस ने भी यीशु पर विश्वास किया। यीशु के चिह्न

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें- http://thirdmill.org

और गहरी शिक्षा उसकी पहचान और उसके द्वारा दिए जाने वाले उद्धार के सामर्थी गवाह थे, और बहुतों ने उस पर विश्वास किया।

> **निश्चित रूप से यूहन्ना के सुसमाचार का मुख्य विषय उद्धार देने वाला विश्वास है; पूरे सुसमाचार में विश्वास करने पर बल दिया गया है। और यह बल दो क्षेत्रों में रखा गया है— पहला विश्वास करना या परमेश्वर की संतान बनना परमेश्वर के कार्य के द्वारा होता है, और दूसरा है कि यह एक व्यक्ति के द्वारा किया गया कार्य है। उद्धार देने वाले विश्वास को निश्चित रूप से एक दान के रूप में समझा जाता है, यह हमारे जीवन में परमेश्वर का अनुग्रह है कि हम विश्वास करते हैं— परंतु यह उस पर आश्रित है जो हम कर रहे हैं, इसलिए इसमें ज्ञान का भी एक पहलू होना आवश्यक है। यह ज्ञान होना जरुरी है कि मसीह हमारे पापों की खातिर क्रूस पर मारा गया। एक सहमति का भाव भी होना जरुरी है कि हम उससे सहमत हैं। परंतु यह ज्ञान और सहमति से कहीं बढ़कर है। इसमें भरोसे का भाव है, और यही विश्वास का सबसे महत्वपूर्ण पहलू है। यह एक व्यक्ति द्वारा अपने खाली हाथ को बढाकर वह सब प्राप्त कर लेना है जो परमेश्वर ने अपने पुत्र मसीह के द्वारा किया है।**
>
> **डॉ. जेफ़ लोमैन**

> **आप जानते हैं, हमारे चारों ओर की दुनिया की जो सबसे निराशाजनक बात यह है कि शब्द “विश्वास” को बहुत ही आम तौर पर और लापरवाही के साथ इस्तेमाल किया जाता है। बहुत से लोग विश्वास के बारे में ऐसे बात करते हैं जैसे कि विश्वास में उनका विश्वास है। मसीह लोग विश्वास के बारे में ऐसे बात नहीं करते। अलग-अलग प्रकार के विश्वास हैं। मैं अभी कुर्सी पर बैठा हूँ। मुझे काफी भरोसा है कि यह मेरा भार सह लेगी। मुझे इस कुर्सी पर विश्वास है। परंतु इस कार्य के अतिरिक्त किसी कार्य के विषय में मुझे इस पर भरोसा नहीं है। यह कोई और कार्य नहीं कर सकती। जब हम ऐसे विश्वास के बारे में बात करते हैं जिससे उद्धार होता है, वह मसीह में विश्वास है। यह भरोसा करना और उस भरोसे में बने रहना है कि मसीह ने वह सब पूरा कर दिया है जो हमारे उद्धार के लिए आवश्यक है। जो विश्वास हमें उद्धार देता है वह मसीह में विश्वास है, यह जानते हुए कि मसीह ने हमारे पापों का दंड सह लिया, यह जानते हुए कि मसीह ने हमारे उद्धार को ख़रीदा है, यह जानते हुए कि मसीह ने हमारे पापों के लिए संपूर्ण बलिदान दिया है, यह जानते हुए कि हमें हमारे पापों की पूरी क्षमा प्राप्त होती है। ऐसा विश्वास जो उद्धार देता है वह मसीह में विश्राम और और भरोसा करना है, यह जानते हुए कि उसने यह हमारे लिए किया है, ऐसा कुछ भी नहीं जो अधूरा छोड़ा गया हो, और कि जो उसके पास विश्वास के साथ आते हैं उन्हें अनंतता के लिए सुरक्षित रखता है। आप जानते हैं, उद्धार देने वाला विश्वास वह है जो इस बात से परिभाषित किया जाता है कि अपने आप में इसका सबसे मूल अर्थ है कि हम मसीह पर भरोसा रखते हैं। और किसी पर नहीं। हमारी और कोई अभिलाषा नहीं है। हम जानते हैं कि मसीह हमारे उद्धार के लिए पर्याप्त है।**
>
> **डॉ. आर. एल्बर्ट मोहलर, जूनियर**

दुर्भाग्यवश, सब लोगों ने यीशु पर विश्वास नहीं किया। 2:12-20 में यीशु ने उनको बाहर खदेड़ा जो मंदिर को अपवित्र कर रहे थे। 2:24-25 में यीशु ने बहुत लोगों के प्रति स्वयं को नहीं दे दिया क्योंकि वह जानता था कि उनमें सच्चा विश्वास नहीं है। और 3:18-21 में हम उस दंड के बारे में पढ़ते हैं जो विश्वास न करने वालों पर आएगा।

बेनाम पर्व

यीशु की सार्वजनिक सेवकाई का तीसरा भाग एक बेनाम पर्व के साथ जुड़ा हुआ है और यह यूहन्ना 5:1-47 में पाया जाता है।

पद 1-15 में यीशु ने एक मनुष्य को चंगा किया जो 38 वर्षों से अपंग था। परंतु क्योंकि वह सब्त का दिन था, इसलिए सब्त के दिन कार्य करने पर व्यवस्था का उल्लंघन करने के कारण यहूदियों के द्वारा यीशु को टोका गया। यूहन्ना 16:47 में यीशु का प्रत्युत्तर पाया जाता है जहाँ उसने दावा किया कि जो उस पर विश्वास करते हैं वह उनके लिए जीवन को देने वाला है।

दूसरा फसह

यीशु की सार्वजनिक सेवकाई के वर्णन का चौथा खंड हमें यूहन्ना 6:1-71 में उसके द्वारा फसह के दूसरे पर्व में शामिल होने की जानकारी देता है।

फसह वह पर्व था जब यहूदी मिस्र से इस्राएल के प्रस्थान का उत्सव मनाते थे। अतः यह चकित करने वाला नहीं है कि इस खंड में निर्गमन के कई उल्लेख पाए जाते हैं। 6:1-15 में यीशु ने चमत्कारिक रूप में पांच रोटियों और दो मछलियों से पांच हजार लोगों को भोजन कराया। इस कार्य ने मिस्र के दासत्व से छूटकर परमेश्वर द्वारा इस्राएल को मन्ना प्रदान करने की घटना को स्मरण दिलाया।

यूहन्ना 6:16-24 में यीशु पानी पर चला, और पानी के ऊपर मूसा से भी बड़े अधिकार को दिखाया जब मूसा ने लाल समुद्र को दो भाग कर दिया था। फिर 6:25-71 में, झील को पार कर लेने के बाद, यीशु ने स्वयं को "स्वर्ग की सच्ची रोटी" के रूप में दर्शाया जो उस मन्ना से कहीं अधिक बढ़कर है जो परमेश्वर ने निर्गमन के दिनों में दिया था। एक सच्ची रोटी के रूप में यीशु ने सब विश्वासियों के लिए सच्चे जीवन के दाता के रूप में फसह के पर्व को पूर्ण किया।

झोपड़ियों का पर्व

यीशु की सार्वजनिक सेवकाई का पाँचवां खंड यूहन्ना 7:1-10:21 में उसके झोपड़ियों के पर्व में शामिल होने के इर्द-गिर्द घूमता है।

यूहन्ना 7:1-52 में यूहन्ना ने बताया कि किस प्रकार यीशु झोपड़ियों के पर्व में शामिल हुआ और उसे पूरा किया।

यूहन्ना 7:1-52 में यीशु ने झोपड़ियों के पर्व के उद्देश्य को पूरा किया। झोपड़ियों का पर्व मिस्र से इस्राएलियों को परमेश्वर द्वारा छुड़ाने, और मरुभूमि में पानी प्रदान करने की याद में मनाया जाता था। यह परमेश्वर द्वारा फसल के लिए निरंतर बरसात भेजने के लिए भी मनाया जाता था। और यह अपने लोगों के लिए परमेश्वर के अंतिम छुटकारे के दिन की प्रतीक्षा करने के रूप में भी मनाया जाता था। पर्व के दौरान याजक मंदिर की वेदी के चारों ओर पानी डालने के द्वारा परमेश्वर की कृपापूर्ण उपलब्धता को दर्शाता था। पानी के इस

रूपक को इस्तेमाल करते हुए, यीशु ने साहस के साथ दावा किया कि वह ही है जो उन्हें "जीवन का जल" दे सकता है।

यूहन्ना 8:12-59 में यीशु ने स्वयं को परमेश्वर का पुत्र कहते हुए सच्चे पुत्रत्व को संबोधित किया। यीशु ने स्वयं को परमेश्वर का पुत्र कहा। उसने इस बात का भी इनकार किया अविश्वासी यहूदी अब्राहम की सच्ची संतान थे।

9:1-42 में यीशु ने जन्म से अंधे एक व्यक्ति को चंगा किया। इसके प्रत्युत्तर में संदेही फरीसी बारीकी से जांचते हैं कि यीशु ने क्या किया है। उनके अविश्वास ने यीशु को यह दावा करने को प्रेरित किया कि फरीसी यद्यपि देखने का दावा करते हैं परंतु वास्तव में अंधे वे ही हैं।

और यीशु ने 10:1-21 में स्वयं को एक अच्छे चरवाहे के रूप में प्रस्तुत किया। फरीसियों के विपरीत, यीशु अच्छा चरवाहा था क्योंकि वह अपनी भेड़ों के लिए अपनी जान देने के लिए भी तैयार था।

समर्पण का पर्व

यीशु की सार्वजनिक सेवकाई का छठा खंड यूहन्ना 10:22-11:57 में उसके समर्पण के पर्व में शामिल होने की घटनाओं का वर्णन करता है। यूहन्ना 10:22-40 दर्शाता है कि यीशु समर्पण के पर्व में शामिल हुआ और उसे पूरा किया।

यूहन्ना 10:22-40 दर्शाता है कि यीशु समर्पण के पर्व में शामिल हुआ। इस पर्व की स्थापना पुराने नियम में नहीं हुई थी। इसकी शुरुआत 165 ई.पू. में हुई थी जब मकाबी के याजकीय परिवार ने यूनानी राजा एंटीओखस एपीफानेस के विरुद्ध एक सफल विद्रोह की अगुवाई की थी। एंटीओखस ने एपीफानेस शीर्षक अपने लिए ले लिया था क्योंकि वह स्वयं को ईश्वर का प्रकटीकरण मानता था। उसने यरूशलेम में कइयों को मार डाला था, मंदिर को अपवित्र कर दिया था, और आज्ञा दी थी कि यहूदी जयूस की आराधना करें। अतः समर्पण का पर्व मकाबियों द्वारा मंदिर को वापिस लेने के बाद उसे फिर से समर्पित करके पवित्र करने का था। आज यह पर्व अपने इब्रानी नाम, *हनुक्काह* के नाम से जाना जाता है, जिसका अर्थ है समर्पण।

यह अनुच्छेद अप्रत्यक्ष रूप से यीशु को एंटीओखस के विपरीत दर्शाता है। एक ओर, एंटीओखस ने गलत ढंग से स्वयं के दैवीय होने का दावा किया जब उसने परमेश्वर के लोगों को मार डाला था और उसके मंदिर को अपवित्र कर दिया था। दूसरी ओर, यीशु वास्तव में परमेश्वर का पुत्र है जो विश्वासयोग्यता से परमेश्वर का कार्य करता है, और अपने लोगों को अनंत जीवन प्रदान करता है। यूहन्ना 10:36 में यीशु ने यह भी दावा किया कि उसे इसी कार्य के लिए ठहराया गया है और इस जगत में भेजा गया है। और यह भाषा समर्पण के भाव में मंदिर के समर्पण को दर्शाती है। और निःसंदेह, यीशु ने यूहन्ना 2:19-21 में मंदिर के पुनर्निर्माण की तुलना अपनी देह के पुनरुत्थान से पहले ही कर दी थी।

ये विषय यूहन्ना 11:1-57 में लाजर के पुनरुत्थान में आगे बढाए जाते हैं, जो मृत्यु पर यीशु की दैवीय शक्ति को दर्शाता है। और लाजर को मृतकों में से जीवित करना सुसमाचार के अंत में यीशु के अपने पुनरुत्थान को भी प्रतिबिंबित करता है, जब समर्पण के पर्व की सारी आशाएं पूरी हो जाएंगी।

तीसरा फसह

यीशु की सार्वजनिक सेवकाई का सातवाँ खंड यूहन्ना 12:1-50 में तीसरे फसह की तैयारियों के इर्द-गिर्द केन्द्रित है।

यूहन्ना द्वारा उल्लिखित तीसरे फसह के लिए यीशु की तैयारियां यूहन्ना 13-17 में उसके बारह चेलों के प्रति उसकी सेवकाई और अध्याय 19 में फसह के मेमने के रूप में उसके बलिदान की भूमिका को तैयार करती हैं। यीशु की तैयारियां 12:1-11 में उसके गाड़े जाने के लिए उसका अभिषेक करने के साथ शुरू हुईं। पद 12-19 में यूहन्ना ने यरूशलेम में यीशु के विजयी प्रवेश को दर्शाया। यूहन्ना 12:20-50 में यीशु ने सार्वजनिक रूप से घोषणा की कि समय आ गया है जब वह मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा महिमा प्राप्त करे। यीशु ने सब सुनने वालों को उस पर विश्वास करने के लिए बुलाया। परंतु उनके सामने आश्चर्यकर्म दिखाने पर भी कई यहूदियों ने तो विश्वास किया परंतु बहुत-से अन्य यहूदियों ने विश्वास नहीं किया।

यूहन्ना के सुसमाचार का अगला भाग उनके समक्ष यीशु की व्यक्तिगत सेवकाई को दर्शाता है जिन्होंने उसे ग्रहण किया था और उस पर विश्वास किया था।

यीशु की व्यक्तिगत सेवकाई

सुसमाचार के इस खंड में अपने चेलों के साथ यीशु के अंतिम भोज और उसके पकड़वाए जाने, क्रूसीकरण और पुनरुत्थान के विवरण मिलते हैं। यह यीशु द्वारा अपने विशेष लोगों के समक्ष अपनी महिमा को प्रकट करने की कहानी है। यूहन्ना ने सिखाया कि यीशु ने उनके साथ बहुत घनिष्ठता से व्यवहार किया जिन्होंने उस पर विश्वास किया था; और उसने अपना जीवन उनके लिए अर्पित कर दिया। इन घटनाओं के माध्यम से यीशु ने परमेश्वर की महिमा इस प्रकार प्रकट की जैसे पहले कभी नहीं देखी गई थी।

यूहन्ना के सुसमाचार का यह खंड उस विचार को प्रकट करता है जो यूहन्ना ने 1:11-12 में व्यक्त किया था, जहाँ उसने ये शब्द लिखे थे।

> **(यीशु) अपने घर आया और उसके अपनों ने उसे ग्रहण नहीं किया। परंतु जितनो ने उसे ग्रहण किया, उसने उन्हें परमेश्वर की संतान होने का अधिकार दिया, अर्थात् उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास रखते हैं। (यूहन्ना 1:11-12)**

यूहन्ना के सुसमाचार के पहले 12 अध्यायों में यीशु ने संसार में सेवा की थी परंतु उसके अपनों ने उसे ग्रहण नहीं किया था। फिर, अध्याय 13 से यीशु ने उन पर अपना ध्यान केन्द्रित किया जिन्होंने उसे ग्रहण किया था, अर्थात् उसके चेले।

हम यूहन्ना के सुसमाचार के इस भाग को दो भागों में देखेंगे। पहला, हम प्रभु-भोज की घटनाओं को देखेंगे। दूसरा, हम यीशु की महानतम महिमा, अर्थात् उसकी मृत्यु और पुनरुत्थान, को देखेंगे। आइए प्रभु-भोज की घटनाओं के साथ आरंभ करें।

प्रभु-भोज

प्रभु-भोज के समय चेलों के प्रति यीशु की सेवकाई का वर्णन चार भिन्न भागों में किया गया है। पहले भाग, यूहन्ना 13:1-30 में यीशु ने उनके पैरों को धोकर उनकी सेवा की।

सेवा- जब यीशु ने विनम्रतापूर्वक अपने चेलों के पार धोए तो उसने पृथ्वी पर की अपनी पूरी सेवकाई का संकेत दिया। इस घटना ने नाटकीय रूप में उसके देहधारण और उद्धार देने वाले क्रूस के बलिदान को चित्रित किया। ब्रह्मांड का सृष्टिकर्ता उनके थके और गंदे पांवों को धोते हुए अपने लोगों के सामने झुका और उनकी सेवा की। यह वही सेवा थी जो अगले दिन क्रूस पर अपनी चरम सीमा तक पहुंचेगी जब वह उनकी थकी और गंदी

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें- http://thirdmill.org

आत्माओं को अपने शुद्ध करने वाले लहू से धोएगा। उनके पांवों को धोने के बाद यीशु ने घोषणा की कि उनमें से एक चेला उसे धोखे से पकड़वाएगा। फिर यहूदा के अंदर जब शैतान ने प्रवेश कर लिया तो अपनी योजना को पूरा करने के लिए यहूदा उस कमरे में से चल गया।

यूहन्ना 13:31-14:31 में पाँव धोने के द्वारा चेलों की सेवा करने के बाद यीशु ने उन्हें शांति दी।

शांति- यहूदा के जाने के बाद यीशु बात करने लगा, जिसे प्रायः "अंतिम वार्तालाप" कहा जाता है, जिसमें उसने अपने विश्वासयोग्य चेलों को इस बात के लिए तैयार किया कि वह जल्द ही उन्हें छोड़कर चला जाएगा।

> **यद्यपि चेले ही इसके श्रोता हैं, फिर भी कुछ कारण है कि प्रेरितिक सेवकाई की अगली पीढ़ियों तक इसे क्यों संभल कर रखा गया। दूसरे शब्दों में, ऐसे व्यक्ति के लिए कुछ हस्तांतरणीय बातें हो सकती हैं जो एक प्रेरित और ऐसे विद्यार्थी के समान जीना चाहता है जो सीख रहा है और समझता है कि उसे संसार में भेजा गया है। यदि आपको अपनी सेवा के बारे में पता है तो आपके लिए उस ऊपरी कक्ष के वार्तालाप में सीखने के लिए बहुत कुछ है। मैं सोचता हूँ कि इस अनुच्छेद में अगुवों के सीखने के लिए बहुत कुछ है। मैं सोचता हूँ कि मसीह की देह में जिनको अगुवाई का पद मिला है उन स्त्री और पुरुषों के लिए उन अध्यायों को पढना बहुत लाभकारी होगा। परंतु जो मैं आम तौर पर कहता हूँ कि संपूर्ण मसीही उद्देश्य यूहन्ना 17 में वास्तव में यीशु के द्वारा प्रकट किया गया है, क्योंकि वह प्रार्थना को विभाजित करता है, प्रेरितों के लिए प्रार्थना करता है, पर फिर यह कहता है, "मैं केवल इन्हीं के लिए विनती नहीं करता, परंतु उनके लिए भी जो इनके वचन के द्वारा मुझ पर विश्वास करेंगे।" अतः यूहन्ना 14, 15, 16 और 17 का पूरा खंड बारह चेलों के लिए और उन सबके लिए हैं जो उनके बाद उसकी कार्य को करेंगे। अतः मैं इसे सब विश्वासियों के लिए महत्वपूर्ण खंड के रूप में देखता हूँ।**
>
> **डॉ. स्टीव हार्पर**

यीशु ने यह कहते हुए अपना अंतिम वार्तालाप आरंभ किया कि उसके महिमान्वित होने का समय आ गया था, अर्थात् वह मृत्यु को सहेगा, मृतकों में से जी उठेगा और अपने स्वर्गीय पिता के पास चला जाएगा। उसके चेलों को उसकी भौतिक उपस्थिति के बिना रहना पड़ेगा, अब वह उनके बीच न तो चलेग, न बात करेगा और न रहेगा। उसने यह भी भविष्यवाणी की कि पतरस तीन बार उसका इनकार करेगा। परंतु यीशु जानता था कि इस मुश्किल खबर से उसके चेले व्याकुल हो गए थे, अतः उसने उन्हें शांति दी और उन्हें पुनः आश्वस्त किया कि वह अंत में उन्हें पिता के पास ले जाएगा। और उसने उन्हें बताया कि वह उन्हें अकेला नहीं छोड़ेगा; वह अपनी जगह पर पवित्र आत्मा को सेवा करने के लिए भेजेगा। यूहन्ना 14:26 में यीशु की प्रतिज्ञा को सुनें।

> **परंतु सहायक अर्थात् पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा, वह तुम्हे सब बातें सिखाएगा, और जो कुछ मैंने तुम से कहा है, वह सब तुम्हे स्मरण कराएगा। (यूहन्ना 14:26)**

यीशु ने प्रतिज्ञा की कि उसके चेले कभी अकेले न होंगे। संसार के द्वारा उन पर मुकद्दमा चलाया जाएगा और सताया जाएगा, परंतु उन्हें यीशु के नाम का या अपना बचाव अकेले करना नहीं पड़ेगा। सत्य का आत्मा यीशु की ओर से उन्हें अचूक और आधिकारिक रूप से बोलने और लिखने की सामर्थ देगा।

अपने चेलों को शांति देने के बाद यीशु ने यूहन्ना 15:1-16:33 में उन्हें अपने प्रस्थान और उनकी भावी सेवकाइयों के लिए तैयार किया।

तैयारी- पिछले खंड के अंत में यीशु और उसके चेले उस स्थान से चले गए जहाँ वे थे, और यीशु ने अपने वार्तालाप का नया भाग आरंभ किया। उसने यूहन्ना 15:1-8 में स्वयं को "सच्ची दाखलता" के रूप में कहकर आरंभ किया। यह रूपक भजन 80:8 और यशायाह 5:1-7 के अनुरूप था, जहाँ इस्राएल राष्ट्र को एक विशाल दाखलता के रूप में चित्रित किया गया था। इस्राएल की असफलता और पाप के कारण उसे बाद में यिर्मयाह 2:21 में "जंगली दाखलता" कहा गया। परंतु यीशु ने इस रूपक का इस्तेमाल अपने चेलों को आश्वस्त करने के लिए किया कि वह इस्राएल के लिए स्वयं एक सच्चे और विश्वासयोग्य राष्ट्र की रचना कर रहा है, और वे इस बड़ी योजना के भाग हैं। सुनिए यूहन्ना 15:1-5 में यीशु ने क्या कहा :

> **सच्ची दाखलता मैं हूँ . . . मैं दाखलता हूँ : तुम डालियाँ हो। जो मुझमे बना रहता है और मैं उसमे, वह बहुत फल फलता है। (यूहन्ना 15:1-5)**

सच्ची दाखलता होने का दावा करने के द्वारा यीशु कह रहा था कि एक महत्वपूर्ण भाव में वह स्वयं इस्राएल है। यीशु ने इस्राएल का प्रतिनिधित्व किया और उसने इस्राएल की नियति को बदल दिया। इस्राएल परमेश्वर के राज्य को पृथ्वी पर स्थापित करने में असफल हो गया था, परंतु यीशु सफल रहा था। और उसके चेले उस दाखलता की डालियाँ थे। वे परमेश्वर के लोगों के भाग थे, और ऐसे दूत थे जिनके द्वारा परमेश्वर सदियों तक अपनी योजना को पूरा करेगा।

परंतु यीशु यह भी जानता था कि संसार उसके चेलों से घृणा करेगा, क्योंकि उसने उससे भी घृणा की थी। इसलिए उसने उन्हें आश्वस्त किया कि वह उनके लिए परमेश्वर से प्रार्थना का द्वार खोल रहा था। वे उसके दूत थे, पृथ्वी पर उसके आधिकारिक प्रतिनिधि। और इस कारण, परमेश्वर उनकी प्रार्थना ऐसे सुनेगा जैसे स्वयं यीशु ने प्रार्थना की हो। जैसा कि उसने यूहन्ना 16:23-24 में उन्हें बताया :

> **मैं तुमसे सच सच कहता हूँ, यदि पिता से कुछ मांगोगे तो वह मेरे नाम से तुम्हे देगा। अब तक तुमने मेरे नाम से कुछ नहीं माँगा; मांगो तो पाओगे ताकि तुम्हारा आनंद पूरा हो जाए। (यूहन्ना 16:23-24)**

अपने चेलों को तैयार करने के बाद यीशु ने यूहन्ना 17:1-26 में उनके लिए प्रार्थना की।

प्रार्थना- यूहन्ना 17 में यीशु की प्रार्थना को प्रायः महायाजकीय प्रार्थना कहा जाता है क्योंकि उसने याजकीय रूप में अपने अनुयायियों के लिए प्रार्थना की थी। विशेष रूप में, यीशु ने प्रार्थना की थी कि परमेश्वर उसके चेलों को सुरक्षित रखे ताकि उनके द्वारा बहुत से अन्य विश्वास में आ सकें। उसने प्रार्थना की कि वे और उनके चेले संसार की शक्तियों से सुरक्षित रहें, कि उनकी एकता उन्हें मजबूत करे, और कि उनके जीवन परमेश्वर को महिमा दें।

> **यीशु जानता था कि उसके पास समय कम है, अब समय आ गया था कि वह अपने पिता के पास वापस जाए और फिर से वैसे रहे जैसे संसार के आरंभ में था। और इस समय यीशु ने कहा कि जो कुछ तूने मुझे दिया था उनमें से एक, अर्थात् विनाश के पुत्र, को छोड़कर सबको सुरक्षित**

रखा है, ताकि पवित्रशास्त्र की बात पूरी हो। अतः यीशु वास्तव में पिता से प्रार्थना कर रहा है। वह कहता है कि मैंने 3 से 3-1/5 वर्ष तक उनके साथ कार्य किया है कि उन्हें पवित्र करूँ और उन्हें इस अवस्था तक लेकर आऊँ। परंतु अब मैं उनके साथ नहीं रहूँगा, इसलिए पिता उन्हें सुरक्षित रख, पवित्रीकरण के इस कार्य को जारी रख क्योंकि उन्हें कष्टों और बड़े सताव का सामना करना होगा, और अब वे कैसे इस पर विजय प्राप्त करेंगे? अतः यह परमेश्वर से प्रार्थना है कि वह कार्य की तैयारी में, कष्टों और सताव में, उनके सामने आने वाली शहादत में, और जिन बातों को उन्हें यीशु के सुसमाचार के सन्देश को फ़ैलाने में बलिदान चढ़ाना है, उनमें उसके चेलों की सहायता करे।

डॉ. थाड जेम्स

प्रभु-भोज के विवरण के बाद यूहन्ना ने यूहन्ना 18:1-20:31 में यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान का वर्णन किया।

मृत्यु और पुनरुत्थान

यूहन्ना के सुसमाचार में यीशु की मृत्यु और पुरुत्थान और उससे जुड़ी घटनाओं को प्रायः यीशु की महिमा की घड़ी के रूप दर्शाया जाता है। पुराने नियम में शब्द "महिमा" प्रायः लोगों के बीच परमेश्वर की महिमा को दर्शाता था। इस्राएल के संपूर्ण इतिहास में परमेश्वर की महिमा इस्राएल के साथ रही। उसकी महिमा वह बादल थी जिसने निर्गमन 16:10 में इस्राएलियों की अगुवाई की थी। निर्गमन 40:34-35 में यह परमेश्वर के तम्बू में थी। 1 राजाओं 8:11 में परमेश्वर की महिमा सुलैमान के मंदिर में थी। और इसी के अनुसार यूहन्ना के सुसमाचार में शब्द "महिमा" देहधारी परमेश्वर के रूप में यीशु को दर्शाती है जो उसके लोगों के मध्य रही। परंतु जब यीशु ने "उसकी महिमा की घड़ी" के बारे में बात की तो वह अपने जीवन के एक समय के बारे में बात कर रहा था जिसमें उसकी महिमा प्रचंड रूप में संसार के सामने प्रकट होगी। दूसरे शब्दों में, वह अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान के बारे में बात कर रहा था।

हम सामान्यतः मृत्यु को महिमामय रूप में नहीं देखते। परंतु यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान ने परमेश्वर के लोगों के लिए मेल-मिलाप को मोल लिया। उसके स्वेच्छा के बलिदान और पुनरुत्थान उन सबके लिए उद्धार और जीवन को लेकर आए जिन्होंने उस पर विश्वास किया और मसीहा के रूप में उसे स्वीकार किया। उन्होंने परमेश्वर के प्रेम और सामर्थ को हमारे सामने इस प्रकार प्रकट किया जैसा हम कभी अनुभव नहीं कर सकते थे। हाँ वे त्रासदीपूर्ण थे, परंतु वे मनोहर भी थे। और उन्होंने परमेश्वर को असीम सम्मान और प्रशंसा प्रदान की। सारांश में, वे मानवीय इतिहास में हुई सबसे महिमामयी घटनाएँ थीं।

यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान का खंड तीन मुख्य भागों में विभाजित है जो यूहन्ना 18:1-19:16 में उसकी गिरफ़्तारी और मुकद्दमों से आरंभ होता है।

गिरफ्तारी और मुकद्दमें- 18:1-11 में पहले यीशु की गिरफतारी के बारे में पढ़ते हैं। यहूदा द्वारा यीशु को अधिकारियों के हाथों पकड़वाए जाने के बाद मुख्य याजकों के सैनिकों और कर्मचारियों और फरीसियों ने आकर यीशु को गिरफ्तार कर लिया। 18:12-27 में यीशु को महायाजक काइफा के सामने पूछताछ के लिए लाया गया। इस समय के दौरान पतरस ने तीन बार यीशु का इनकार किया, जैसी यीशु ने भविष्यवाणी की थी।

फिर यीशु को 18:28-19:16 में रोमी राज्यपाल पिलातुस के सामने लाया गया। पिलातुस ने कहा कि यीशु निर्दोष है, परंतु उसने यहूदियों के डर के मारे उसे नहीं छोड़ा। परंतु यीशु की गिरफ़्तारी और मुकद्दमों के पीछे सच्ची सामर्थ स्वयं परमेश्वर था। नियंत्रण न तो पिलातुस के पास था और न ही काइफा के पास। सब कुछ परमेश्वर की योजना के अनुसार हुआ। जैसा कि हम यूहन्ना 19:10-11 में पढ़ते हैं :

पिलातुस ने उससे कहा, "मुझसे क्यों नहीं बोलता? क्या तू नहीं जानता कि तुझे छोड़ देने का अधिकार मुझे है, और तुझे क्रूस पर चढ़ाने का भी मुझे अधिकार है।" यीशु ने उत्तर दिया, "यदि तुझे ऊपर से न दिया जाता, तो तेरा मुझ पर कुछ अधिकार न होता।" (यूहन्ना 19:10-11)

यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान के यूहन्ना के वर्णन का दूसरा मुख्य भाग यूहन्ना 19:16-37 में क्रूसीकरण है।

क्रूसीकरण- यीशु की मृत्यु के अपने वर्णन में यूहन्ना ने स्पष्ट किया कि किस प्रकार क्रूसीकरण की घटनाओं ने मसीहा की पुराने नियम की अपेक्षाओं को पूरा किया। इस विवरण ने दर्शाया कि इससे यीशु को कोई आश्चर्य नहीं हुआ; सब कुछ परमेश्वर की योजना के अनुसार हुआ।

अपनी गिरफ्तारी, मुकद्दमों और क्रूसीकरण के दौरान यीशु ने चुपचाप अपनी गरिमा बनाए रखी। परमेश्वर के पुत्र ने अपने लोगों के लिए अपनी जान दे दी, और ऐसा करने के द्वारा परमेश्वर की महिमा को इस प्रकार प्रकट किया जैसे पहले कभी प्रकट नहीं की गई थी। अपने लोगों को छुड़ाने के लिए परमेश्वर किस हद तक जाएगा? क्रूस की हद तक?

बाइबल कहती है कि यीशु अपने सामने रखे आनंद के कारण क्रूस तक गया। किसी के लिए भी किया जाने वाला सबसे कठिन कार्य है क्रूस। इससे बड़ा कोई कष्ट नहीं हो सकता जो परमेश्वर के पुत्र ने क्रूस पर अनुभव किया, जैसा कि उसने केवल एक क्रूर देहिक म्रत्यु का सामना ही नहीं किया बल्कि उसने अपने ऊपर हमारे पाप के भार को भी सहन किया, और अपने कंधों पर परमेश्वर के क्रोध को। अतः अब तक का सबसे कठिन कार्य है, परंतु यीशु ने अपने सामने रखे आनंद के लिए यह सब किया। अब, उसने ऐसा क्यों किया? उसने ऐसा इसलिए किया क्योंकि वह जानता था कि इसका परिणाम क्या होगा। यह परमेश्वर की महिमा को प्रकट करेगा। उसके प्रेम, उसके न्याय, उसके क्रोध, उसकी पवित्रता, उसकी करुणा, और उसकी दया ख़ूबसूरती के साथ क्रूस पर इस प्रकार प्रकट होगी जहाँ हम देखेंगे कि वह कौन है, और हम अनंतता तक उसकी आराधना कर पाएँगे जब हम उस वध किए गए मेमने के सामने एकत्र होंगे। जहाँ हम आराधना करते हैं वहां उसका सिंहासन होता है। अतः परमेश्वर ने अपने चरित्र और अपनी महिमा को प्रकट किया है, और क्रूस पर दिखाया है कि वह कौन है, और हम उसकी आराधना करते हैं। और अपने अनेक पुत्रों को इस क्रूस में वह महिमा प्रदान करता है। और इसीलिए वह उसे आनंद के साथ कर पाया, क्योंकि वह जानता था कि अंततः इसका परिणाम क्या होगा।

डॉ. के. एरिक थोनेस

तीसरा, यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान का वर्णन यूहन्ना 20:1-31 में पुनरुत्थान के साथ समाप्त होता है।

पुनरुत्थान- यूहन्ना 20:1-9 के अनुसार यीशु की कब्र एक ऐतिहासिक सत्य था। मरियम, पतरस और यूहन्ना ने स्वयं देखा था कि यीशु वहां नहीं था। 20:10-31 में यीशु मरियम मगदलीनी, चेलों और थोमा के सामने प्रकट हुआ। ये वर्णन बताते हैं कि यीशु के अनुयायी कुछ संशय में थे और उन्हें आसानी से मूर्ख नहीं बनाया जा सकता था।

विशेषकर, जब यीशु पहली बार अपने चेलों के सामने प्रकट हुआ तो थोमा वहां नहीं था। और थोमा संशयी था। वह प्रमाण चाहता था। वह पुनरुत्थान की किसी मनगढ़ंत कहानी पर विश्वास करने वाला नहीं था। और पद 28 में उसका अंगीकरण यूहन्ना के वर्णन का चरम बिंदु है जहाँ थोमा ने इन शब्दों के साथ यीशु को वास्तविक माना, “मेरे प्रभु और मेरे परमेश्वर”।

> **यह काफी चकित करने वाला है कि जब थोमा ने दूसरे चेलों से उसके बारे में सुना, जिसे वह व्यक्तिगत रूप से जानता है, जिसके साथ वह अब घूमता रहा है- वह इन लोगों को भी जानता है- और वे उसे बताते हैं कि उन्होंने जी उठे यीशु को देखा है तो वह उस बात को स्वीकार ही नहीं कर पाता है। ऐसा नहीं कि कोई अजनबी उसे ये बता रहे हैं, और वे सब इस बात पर सहमत हैं। परंतु वह इस बात पर विश्वास नहीं कर पाता। और मैं सोचता हूँ कि यह शायद विश्वास करने के बाद पुनः निराश हो जाने के जोखिम लेने की उसकी अयोग्यता के कारण है। मेरे विचार में वह पुनः निराश हो जाने से भयभीत है।**
>
> **डॉ. डेविड रेडलिंग्स**

> **आपके पास थोमा के संदेह करने और ये जानेमाने शब्द कहने का विवरण है, “जब तक मैं कीलों के छेदों में अपनी ऊँगली न डाल लूं, और उसके पंजर में अपना हाथ न डाल लूं, तब तक मैं प्रतीति नहीं करूँगा” और प्रायः थोमा को “संदेही थोमा” के रूप जाना जाता है क्योंकि उसने यीशु पर विश्वास नहीं किया, परंतु मैं सोचता हूँ कि हमें थोमा के प्रति इतना कठोर नहीं बनना चाहिए। पहली घटना में यूहन्ना हमें बताता है कि थोमा उस समय बारहों के साथ नहीं था जब यीशु उनके बीच आया और स्वयं को उनके सामने प्रकट किया। और दूसरा, यदि हम यह मानते हैं कि चेलों को यीशु के पुनरुत्थान के गवाहों के रूप में चुना गया था तो एक भाव यह बनता है कि विश्वास करने के लिए थोमा को देखना जरूरी था। और तीसरा, हमें यह भी कहना चाहिए कि जब यीशु उनके मध्य खड़ा हुआ और स्वयं को थोमा के सामने प्रकट किया तो थोमा ने सारे सुसमाचार के विश्वास के सबसे साहसी और स्पष्ट अंगीकरण को प्रस्तुत किया। वह यीशु को “मेरे प्रभु और मेरे परमेश्वर” कहता है। और फिर यूहन्ना वास्तव में यूहन्ना 20 के अंत में इसे स्पष्ट करता है कि यीशु ने कहा था कि क्योंकि तुमने देखा इसलिए विश्वास किया, परंतु अब से धन्य होंगे वे जो बिना देखे विश्वास करेंगे। और इसलिए एक भाव बनता है जिसमें थोमा को विश्वास करने के लिए देखना जरुरी था, परंतु एक भाव ऐसा भी जिसमें आप और मैं देखते हैं, यीशु को हमारे सामने खड़ा देखते हुए नहीं, परंतु वास्तव में उस सब की सराहना करते हुए और उसे समझते हुए जो कुछ उन्होंने देखा और हमारे लिए उस पर विश्वास किया। इसलिए मैं सोचता हूँ कि हम कभी-कभी थोमा के साथ पक्षपात करते हैं क्योंकि उसकी अपनी एक अलग भूमिका थी, और क्योंकि वह एक ऐसा उदाहरण है कि जब उसने यीशु को सचमुच देखा कि**

वह कौन है तो उसने उसमें अद्वितीय विश्वास को व्यक्त किया। वह हम सबके लिए भी एक उदाहरण है कि जब हम यह समझ जाते हैं कि यीशु कौन है तो हमें भी दंडवत करके यीशु की आराधना करनी चाहिए।

डॉ. साइमन विबर्ट

यूहन्ना के सुसमाचार का अंतिम भाग यीशु के पृथ्वी पर के जीवन और सेवकाई का निष्कर्ष है, जो यूहन्ना 21:1-25 में पाया जाता है।

निष्कर्ष

यह निष्कर्ष सारे सुसमाचार से विषयों को लेता है और पाठकों को भविष्य की ओर निर्देशित करता है। पिछले अध्याय के समान पद 1-14 में यह जी उठे यीशु के प्रकट होने के विषय में बताता है। परंतु इस बार महत्व प्रकट होने को दिया गया है। पद 1 और 14 में यूहन्ना ने इस प्रकटीकरण को प्रकाशन के रूप में कहा और उसी शब्द का प्रयोग किया जिसका उसने 2:11 में यह कहते हुए प्रयोग किया था कि यीशु ने “अपनी महिमा प्रकट की”। अतः इस प्रकटीकरण को पुनरुत्थान के सामान्य प्रमाण के रूप में प्रयोग करने की अपेक्षा यूहन्ना चाहता था कि हम इस वर्णन को यीशु के प्रकाशन और उसकी महिमा की पूर्णता के रूप में पढ़ें जो उसके सुसमाचार के पहले अध्याय से आरंभ होकर उसके सारे विवरण में बने हुए थे।

इससे बढ़कर, निष्कर्ष प्रेरितों और अन्य चेलों के यीशु के गवाह बनने के अधिकार की भी पुष्टि करता है, इस बात के बावजूद भी कि महत्वपूर्ण प्रेरित पतरस ने तीन बार यीशु का इनकार किया था। यूहन्ना 21:15-23 में यीशु ने पतरस को क्षमा करने और तीन अलग-अलग बार उसे पुनर्स्थापित करने के द्वारा यीशु ने पतरस के इनकारों को प्रभावहीन किया। और इन पुनर्स्थापनाओं में यीशु ने पतरस को परमेश्वर की भेड़ों को चराने की आज्ञा दी। यीशु स्वयं एक अच्छा चरवाहा था। परंतु अब उसने पतरस को नियुक्त किया कि वह परमेश्वर के लोगों को सँभालने में उसका अनुसरण करे।

अन्य सभी सुसमाचार किसी न किसी प्रकार की महान आज्ञा के साथ समाप्त होते हैं- अर्थात् प्रेरितों और अन्य चेलों को कलीसिया का निर्माण करने की यीशु की आज्ञा के द्वारा। और पतरस की पुनर्स्थापना की यह कहानी कलीसिया के भविष्य की ओर देखने का यूहन्ना का तरीका है। यीशु ने अपने लोगों के साथ सदैव रहने की प्रतिज्ञा की थी। और उसने यहाँ इस बात को स्पष्ट किया कि अपने लोगों के साथ रहने का एक तरीका पतरस जैसे दूसरे चरवाहों के माध्यम से होगा। जैसा कि स्वयं पतरस ने बाद में 1 पतरस 5:1-2 में लिखा :

तुम में जो प्राचीन हैं, मैं उनके समान प्राचीन और मसीह के दुःखों का गवाह और प्रकट होनेवाली महिमा में सहभागी होकर उन्हें समझाता हूँ कि परमेश्वर के उस झुण्ड की जो तुम्हारे बीच में है, रखवाली करो। (1 पतरस 5:1-2)

अधिकांश विद्वान् मानते हैं कि यूहन्ना का सुसमाचार उस समय लिखा गया था जब अंतिम प्रेरित मर रहे थे। उस समय शायद यूहन्ना अंतिम प्रेरित बचा हो। इसलिए यह परमेश्वर के लोगों के लिए महत्वपूर्ण था कि वे यह सुनें कि यीशु भेड़ों के चरवाहों के माध्यम से अभी भी उपस्थित है। अंततः यह न तो पतरस और न ही कोई चेला था जिसने कलीसिया को अगुवाई दी। यह यीशु था जिसका उन्होंने अनुसरण किया था। उन्होंने उसके दूतों या सहायकों के रूप में ही कार्य किया था। और यीशु ने अपने लोगों के लिए देहिक और स्थाई रूप में वापिस आने की प्रतिज्ञा की ताकि वह भविष्य में उनकी अगुवाई करे।

हम यहाँ यूहन्ना के सुसमाचार की पृष्ठभूमि और संरचना एवं विषयवस्तु को देख चुके हैं, अतः अब हम उन मुख्य विषयों पर ध्यान देने के लिए तैयार हैं जिन पर यूहन्ना ने बल दिया था।

मुख्य विषय

यूहन्ना ने अपने उद्देश्यात्मक कथन यूहन्ना 20:30-31 में अनेक महत्वपूर्ण विषयों की सूची दी है, जहाँ हम इन वचनों को पढ़ते हैं।

> **यीशु ने और भी बहुत से चिह्न चेलों के सामने दिखाए, जो इस पुस्तक में लिखे नहीं गए; परंतु ये इसलिए लिखे गए हैं कि तुम विश्वास करो कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है, और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ। (यूहन्ना 20:30-31)**

हमारे अध्याय के इस भाग में हम आपस में गहराई से जुड़े उन चार विषयों को देखेंगे जिन्हें यूहन्ना के उद्देश्यात्मक कथन से लिया गया है : विश्वास करने का कार्य, मसीह के रूप में यीशु की पहचान, उसके साथ-साथ परमेश्वर के पुत्र के रूप में उसकी पहचान और जीवन की वे आशीषें जो वह लाता है। आइए विश्वास करने पर यूहन्ना द्वारा दिए गए महत्व के साथ शुरू करें।

विश्वास करना

यूहन्ना ने यूनानी शब्द *पिस्टयुओ,* अर्थात् “विश्वास करना” का 106 बार प्रयोग किया। अन्य तीन सुसमाचारों ने मिलकर 34 बार इसका प्रयोग किया है, यूहन्ना के सुसमाचार का केवल तीसरा हिस्सा। महत्व देने में यह अंतर दर्शाता है कि यूहन्ना की कहानी में विश्वास का विचार कितना महत्वपूर्ण है।

यूहन्ना के सुसमाचार में विश्वास करने का विचार उन अन्य विचारों से निकटता से जुड़ा है जो इन शब्दों के द्वारा प्रकट किए गए हैं, जैसे “स्वीकार करना,” “आना” और “जानना”। अतः यीशु में विश्वास करने का अर्थ है उसे स्वीकार करना, उसके पास आना, और परस्पर अनुभव के भाव में उसे जानना।

इस प्रकार का विश्वास करना, स्वीकार करना, जानना और यीशु के पास आना प्रायः मसीह पर भरोसा करने और उसका अनुसरण करने के व्यक्तिगत निर्णय के समय के साथ आरंभ होता है- वही कार्य जिसे आज के मसीही प्रायः “हृदय-परिवर्तन” कहते हैं। जब हृदयपरिवर्तन सच्चा होता है, यह भिन्न रूपों में हमें परमेश्वर के कार्य में शामिल होने और उसकी आशिषों को प्राप्त करने में प्रेरित करता है। अपने सुसमाचार के इस भाग में यूहन्ना ने हृदयपरिवर्तन का उल्लेख परमेश्वर की संतान बनना और अनंत जीवन प्राप्त करना जैसे वाक्यांशों के रूप में किया है। यूहन्ना 1:12 में विश्वास करने के यूहन्ना के वर्णन को सुनें :

> **परंतु जितनों ने उसे ग्रहण किया, उसने उन्हें परमेश्वर की संतान होने का अधिकार दिया, अर्थात् उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास रखते हैं। (यूहन्ना 1:12)**

और यूहन्ना 3:36 में हम ऐसी ही अभिव्यक्ति को पाते हैं, जहाँ हम ये शब्द पढ़ते हैं :

> **जो पुत्र पर विश्वास करता है, अनंत जीवन उसका है; परंतु जो पुत्र की नहीं मानता, वह जीवन को नहीं देखेगा। (यूहन्ना 3:36)**

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें- http://thirdmill.org

ऐसे अनुच्छेदों में विश्वास करना यीशु पर व्यक्तिगत निर्भरता और समर्पण का सच्चा और ह्रदय से निकला कार्य है जो हमें उसके साथ जोड़ता है। यह इतिहास में हमें परमेश्वर के कार्य का भाग बनाता है। और यह अपनी संपूर्णता में तभी पहुंचेगा जब यीशु अपनी पूरी महिमा में प्रकट होगा।

अब यह अनुभव करना महत्वपूर्ण है कि यूहन्ना ने "विश्वास करना" शब्द का प्रयोग सदा एक ही रूप में नहीं किया। कुछ अनुच्छेदों में यूहन्ना ने "विश्वास करना" शब्द का प्रयोग सतही विश्वास को दिखाने के लिए किया है- जिसे धर्मविज्ञानी प्रायः "अस्थाई" या "पाखंडी" विश्वास कहते हैं। उदाहरण के तौर पर यूहन्ना 2:23-24 में यूहन्ना के वर्णन को सुनें :

> **जब (यीशु) यरूशलेम में फसह के समय पर्व में था, तो बहुतों ने उन चिह्नों को जो वह दिखाता था देख कर उसके नाम पर विश्वास किया। परंतु यीशु ने अपने आप को उनके भरोसे पर नही छोड़ा क्योंकि वह सबको जानता था। (यूहन्ना 2:23-24)**

यीशु ने अपने आप को इन लोगों के भरोसे पर नहीं छोड़ा क्योंकि उनका विश्वास केवल सतही था। यह वह सच्चा विश्वास नहीं था जिसे धर्मविज्ञानी प्रायः "उद्धार देने वाला विश्वास" कहते हैं।

अधिकांशतः हम संदर्भ के अनुसार कह सकते हैं कि यूहन्ना ने "विश्वास करना" का प्रयोग तब किया जब उसके मन में सच्चा उद्धार देने वाला विश्वास था, अर्थात् उद्धारकर्त्ता और प्रभु के रूप में यीशु पर सच्चा विश्वास। यूहन्ना के लिए यीशु- हमारे विश्वास का लक्ष्य- संपूर्ण महत्व रखता है। यह हमारे विश्वास की शक्ति नहीं है जो हमें उद्धार देती है, परंतु उसकी सामर्थ जिस पर हम विश्वास करते हैं।

हम यहाँ पर यीशु पर विश्वास करने के विषय को देख चुके हैं, इसलिए आइए अब हम उस महत्वपूर्ण बात की ओर मुड़ें जिस पर यूहन्ना चाहता है कि हम यीशु के विषय में विश्वास करें- वह मसीह है, पुराने नियम का मसीहा, परमेश्वर द्वारा अपने लोगों, इस्राएल, से की गई प्राचीन प्रतिज्ञाओं की पूर्णता।

मसीह

यीशु को "मसीह" कहने के द्वारा यूहन्ना ने स्पष्ट रूप से उसे इस्राएल के राजा के रूप में दर्शाया। पहली सदी में "मसीह" या "मसीहा" शब्द "इस्राएल के राजा" का समानार्थी बन गया था। मसीह यही था। परंतु इस तथ्य के बहुत से अर्थ थे कि यीशु इस्राएल का राजा था, और यूहन्ना ने इनमें से कईयों पर ध्यान आकर्षित किया है।

उदाहरण के तौर पर, यूहन्ना ने बल दिया कि पुराने नियम के इस्राएल और यहूदा के राजाओं के समान यीशु ने उन लोगों को प्रस्तुत किया जिन पर उसने शासन किया। यीशु वह सब बन गया जो इस्राएल बनने में असफल हो गया था, और इसलिए उसने वह सारी आशीषें प्राप्त कीं जो इस्राएल पहले पाने में असफल हो गया था। इस्राएल के राजा के रूप में यीशु ने हर रूप में इस्राएल का प्रतिनिधित्व किया और उनका स्थानापन्न एवं उनके लिए परमेश्वर की आशिषों का माध्यम दोनों बन गया।

यूहन्ना 15:1-8 में यूहन्ना ने यह कहते हुए यीशु के विषय में इस सत्य को प्रकट किया कि यीशु सच्ची दाखलता है, और कि उसके अनुयायी उसकी डालियाँ हैं। सुनिए यीशु ने यूहन्ना 15:5-8 में क्या कहा :

> **मैं दाखलता हूँ : तुम डालियाँ हो। जो मुझमें बना रहता है और मैं उसमें, वह बहुत फल फलता है . . . मेरे पिता की महिमा इसी से होती है कि तुम बहुत सा फल लाओ, तब ही तुम मेरे चेले ठहरोगे। (यूहन्ना 15:5-8)**

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें- http://thirdmill.org

संपूर्ण पुराने नियम में इस्राएल को परमेश्वर की दाखलता के रूप में चित्रित किया गया है। हम इस चित्रण को भजन 80, यिर्मयाह अध्याय 2, यहेजकेल अध्याय 17 और होशे अध्याय 10 में पाते हैं। इससे बढ़कर दाऊद के राजकीय परिवार और भविष्य के महान मसीहा को भी उस डाली के रूप में प्रस्तुत किया गया था जिसमें से परमेश्वर के सारे लोग निकलेंगे। हम इसे यशायाह 11:1 जैसी जगहों में पाते हैं। अतः इस पृष्ठभूमि में जब यीशु ने सच्ची दाखलता होने और परमेश्वर को प्रसन्न करने एवं उसे महिमा देने के एकमात्र मार्ग होने का दावा किया, तो उसके चेले शायद समझ गए होंगे कि यीशु इस्राएल का वह सच्चा राजा था जिसने अपने लोगों का प्रतिनिधित्व किया और उन्हें प्रस्तुत किया।

परंतु इस विचार के क्या अर्थ हैं कि राजा होने के रूप में यीशु सच्चा या वास्तविक इस्राएल है? एक तो यह कि यीशु वह सब बन रहा था जो इस्राएल को बनने के लिए बुलाया गया था। इस्राएल वह सब बनने और करने में असफल हो गया था जो परमेश्वर ने उसे बनने और करने के लिए बुलाया था। परंतु जहाँ इस्राएल पाप के कारण असफल हो गया था, वहां यीशु पूरी तरह से सफल रहा था। उसने इस्राएल की नियति को पूरा कर दिया था। अपने व्यक्तित्व में यीशु ने पुराने नियम के सदियों के इतिहास को पूरा किया और परमेश्वर की महिमामय उपस्थिति को वैसे ही पूरा किया जैसा केवल वह कर सकता था। और इस कारण इस्राएल के सच्चे लोगों की पहचान इस्राएल राष्ट्र की सदस्यता से नहीं होती। इसकी अपेक्षा वे ऐसे लोग हैं जो सच्ची दाखलता में डालियाँ हैं- अर्थात् मसीह में विश्वासी हैं जो विश्वास के साथ उससे जुड़े हुए हैं।

मसीह के रूप में यीशु की प्रतिनिधि की भूमिका के बारे में हमारी चर्चा उन तीन तरीकों पर केन्द्रित होगी जिसमें यीशु ने पुराने नियम की मसीहा की अपेक्षाओं को पूरा किया और जो यूहन्ना के सुसमाचार में बहुत महत्वपूर्ण हैं। पहला, यीशु ने मंदिर को पूरा किया। दूसरा, उसने इस्राएल के पर्वों द्वारा रखी गई अपेक्षाओं को पूरा किया। और तीसरा, उसने परमेश्वर की व्यवस्था को पूरा किया। हम इन सारे विचारों को देखेंगे, आइए इससे शुरू करें कि यीशु ने किस प्रकार मंदिर को पूरा किया।

मंदिर

पवित्रशास्त्र में मंदिर के महत्वपूर्ण होने का कारण यह था कि यह वह स्थान जहाँ परमेश्वर ने अपने लोगों के साथ एक विशेष रूप से उपस्थित होने की प्रतिज्ञा की थी। निःसंदेह हम जानते हैं कि परमेश्वर सर्वव्यापी है; वह हर समय में हर जगह पर है। परंतु जब हम उसकी विशेष उपस्थिति के बारे में बात करते हैं तो हमारे मन में उसकी उपस्थिति का प्रकटीकरण होता है- अर्थात् ऐसे समय जब परमेश्वर ने किन्हीं विशेष स्थानों में अपनी उपस्थिति को दर्शाया, और प्रायः उन रूपों में जो दिखाई देने में महिमामय हों।

> **तम्बू और मंदिर में परमेश्वर की उपस्थिति महत्वपूर्ण है तम्बू और मंदिर छोटे रूप में पूरा ब्रह्मांड हैं। वे संपूर्ण जगत के लघु रूप हैं, अतः परमेश्वर की उपस्थिति वहां संसार में उसकी उपस्थिति का प्रतिनिधित्व करती है। संसार वह मंदिर है जिसे उसने बनाया और जिसमें उसने अपने लोगों से संगति की। और जब आदम ने पाप किया तो परमेश्वर ने इस वंश के लोगों को चुना जो अंत में इस्राएल राष्ट्र बन गया और परमेश्वर ने उनके बीच वास किया। और जहाँ वह उनके मध्य रहता है, वह संसार का यह छोटा रूप था, और यह उपस्थिति अद्वितीय है क्योंकि इस्राएल परमेश्वर की उपस्थिति के लिए वहीँ जाता है, अर्थात् तम्बू में और फिर मंदिर में, और यह उसका पूर्वानुभव भी है कि परमेश्वर इस संसार में क्या करने जा रहा है। जब परमेश्वर तम्बू के समर्पण में उसे भरता है, जब निर्गमन के अंत में यह पूरा हो जाता है और 1 राजा 8 में**

जब वह मंदिर को भरता है, तो हमें वह पूर्वदर्शन मिलता है कि ब्रह्मांड में तब क्या होगा जब परमेश्वर की महिमा पूरी तरह से प्रकट होगी।

डॉ. जेम्स हैमिल्टन

अपने लोगों के बीच परमेश्वर की विशेष उपस्थिति का विषय बाइबल के इतिहास में कई चरणों में पूरा होता है। आरम्भ में, अदन की वाटिका पृथ्वी पर एक पवित्र स्थान थी जहाँ परमेश्वर की विशेष उपस्थिति रहती थी। वह पृथ्वी पर उसका सिंहासन कक्ष समझा जाता था, जहाँ से मनुष्यजाति को पूरी पृथ्वी को पवित्र करना था, अर्थात् पूरे संसार को परमेश्वर के पवित्र राज्य में बदलना था।

बाद में जब परमेश्वर ने इस्राएल को राजकीय याजकपद दिया तो उसने पहले अपनी विशेष उपस्थिति को पहले तम्बू के साथ जोड़ा और फिर बाद में मंदिर के साथ। तम्बू और मंदिर की साज-सज्जा और बनावट अदन की वाटिका के सदृश्य थी और तम्बू एवं मंदिर ने वाटिका के समान कार्यों को पूरा किया। पवित्रशास्त्र यह दर्शाते हुए इस संबंध की पुष्टि करता है कि तम्बू और मंदिर पृथ्वी पर परमेश्वर के राजकीय सिंहासन कक्ष थे- अर्थात् ऐसे स्थान जहाँ उसने अपने लोगों के बीच महिमामय रूप में वास किए। यह बात 1 इतिहास 28:2, भजन 11:4 और यशायाह 6:1 जैसे स्थानों में स्पष्ट रूप से पाई जाती है। ये पृथ्वी के सबसे पवित्र स्थान थे। ये ऐसे स्थान थे जहाँ परमेश्वर की आशीषें उसके लोगों द्वारा प्राप्त की जा सकती थीं। और अदन की वाटिका के समान वे उसके राज्य के केंद्र थे, जहाँ से उसके लोगों को उसके राज्य के रूप में पृथ्वी को पवित्र बनाना था। और यूहन्ना के सुसमाचार के अनुसार यीशु के महत्व को समझने का एक जीवंत तरीका यह देखना है कि वह परमेश्वर के तम्बू और मंदिर के पुराने नियम के विषय को पूरा करता है। सुनिए यूहन्ना ने यूहन्ना 1:14 में क्या लिखा :

(यीशु) देहधारी हुआ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया, और हमने उसकी ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के एकलौते की महिमा। (यूहन्ना 1:14)

जब यूहन्ना ने यीशु के "हमारे बीच डेरा करने" के विषय में कहा तो उसने यूनानी क्रिया *स्केनू* का प्रयोग किया जो *स्केने* नामक संज्ञा से जुड़ी है, जिसका अर्थ है मंडप या तम्बू। वास्तव में, इसी संज्ञा का प्रयोग सेप्टुआजिंट- पुराने नियम के यूनानी अनुवाद- में परमेश्वर के पवित्र तम्बू के लिए किया गया है। इस क्रिया का प्रयोग करने और इसे परमेश्वर की उपस्थिति की "महिमा" से जोड़ने के द्वारा यूहन्ना ने इसे स्पष्ट कर दिया कि यीशु अब परमेश्वर की उसी विशेष उपस्थिति तक हमारी पहुँच स्थापित कर रहा था जो पहले तम्बू में उपलब्ध थी।

और यूहन्ना ने यूहन्ना 2:19-21 में उसी बात को दर्शाया, जहाँ हम इस विवरण को पढ़ते हैं :

यीशु ने उनको उत्तर दिया, "इस मंदिर को ढा दो, और मैं इस तीन दिन में खड़ा कर दूंगा।" यहूदियों ने कहा, "इस मंदिर के बनाने में छियालीस वर्ष लगे हैं, और क्या तू उसे तीन दिन में खड़ा कर देगा।" परंतु उसने अपनी देह के मंदिर के विषय में कहा था। (यूहन्ना 2:19-21)

यहाँ यूहन्ना ने स्पष्ट कर दिया कि यीशु मंदिर की पूर्णता भी था।

यूहन्ना ने यह भी स्पष्ट किया कि देहिक तौर पर यीशु के पृथ्वी पर उपस्थित नहीं होने के बाद भी उसके अनुयायी परमेश्वर की विशेष उपस्थिति का आनंद लेंगे। इसीलिए यूहन्ना 4:21 में यीशु ने सामरी स्त्री को बताया कि वह दिन शीघ्र आ रहा है जब परमेश्वर की आराधना में न तो यरूशलेम के मंदिर और न ही सामरियों के पवित्र स्थान का कोई विशेष महत्व रह जाएगा। जैसा की यीशु ने यूहन्ना 4:23-24 में कहा :

परंतु वह समय आता है, वरन् अब भी है, जिसमे सच्चे भक्त पिता की आराधना आत्मा और सच्चाई से करेंगे . . . परमेश्वर आत्मा है और अवश्य है कि उसकी आराधना करने वाले आत्मा और सच्चाई से आराधना करें। (यूहन्ना 4:23-24)

सामरी स्त्री से कहे गए यीशु के शब्द आधुनिक कलीसिया के लिए बड़े उत्साहवर्धक होने चाहिए, क्योंकि हम वैसे ही समय में रह रहे हैं जिसके बारे में यीशु बात कर रहा था। हमारे समय में यीशु पृथ्वी पर देहिक रूप से उपस्थित नहीं है। इब्रानियों 8:2 और 9:11-12 के अनुसार वह स्वर्ग में परमेश्वर के तम्बू में देहिक रूप से वास करता है। परंतु आत्मिक रूप से वह हमारे साथ उपस्थित है, विशेषकर जब हम एक कलीसिया के रूप में एकत्रित होते हैं। हम इस बात को मत्ती 18:20 और 1 पतरस 2:4-9 जैसे स्थानों में देखते हैं। और क्योंकि यीशु हमारे साथ उपस्थित है, इसलिए अब हम पृथ्वी पर परमेश्वर की विशेष उपस्थिति के पवित्र मंदिर हैं।

परंतु मसीह में मंदिर की यह अद्भुत पूर्णता भी जाती रहेगी जब यीशु अपनी महिमा में पुनः आएगा। प्रकशितवाक्य 21:1-5 जैसे अनुच्छेद सिखाते हैं कि जब यीशु का पुनरागमन होगा तो वह संपूर्ण सृष्टि को परमेश्वर के निवास स्थान में बदल देगा। उस समय मसीह और पिता सदैव हमारे साथ वास करेंगे और सारी पृथ्वी परमेश्वर की महिमा से भर जाएगी।

यूहन्ना के सुसमाचार में यीशु द्वारा पुराने नियम की मसीहा-संबंधी अपेक्षाओं को पूरा किए जाने का दूसरा रूप इस्राएल के पर्वों के महत्व को पूरा करना था।

पर्व

जैसा कि हमने पहले उल्लेख किया, यूहन्ना के सुसमाचार को उन पर्वों के इर्द-गिर्द देखा जा सकता है जिसमें यीशु शामिल हुआ था। इन पर्वों में फसह, झोंपड़ियों और समर्पण के कई पर्व थे। परमेश्वर ने इस्राएल को राजकीय याजकपद प्रदान करने और तम्बू एवं मंदिर में उसकी विशेष उपस्थिति की आशिषों का आनंद लेने के लिए इन पर्वों को स्थापित किया था। और अपने सुसमाचार में यूहन्ना ने इसे स्पष्ट किया कि यीशु ने इन पर्वों के महत्व को पूरा किया।

फसह का पर्व इस्राएल के तीन मुख्य वार्षिक पर्वों में से एक था। यह मिस्र से इस्राएल के कूच का पर्व था। संक्षिप्त में, यीशु ने इस पर्व को पूरा किया क्योंकि वह फसह के मेमने के उस समान था, जिसे फसह के दिन मारा गया और खाया गया, और जिसका लहू मिस्र से इस्राएल के छुटकारे का प्रतीक था। सभी चारों सुसमचारों ने यीशु को फसह के सच्चे मेमने के रूप में पहचाना। परंतु केवल यूहन्ना ने यूहन्ना बप्तिस्मादाता के इन शब्दों को दर्शाते हुए यूहन्ना 1:29 में इस बात को प्रकट किया, "देखो यह परमेश्वर का मेमना है जो जगत के पाप उठा ले जाता है।" यूहन्ना 19:33 में यूहन्ना ने यह भी बताया कि जब यीशु की मृत्यु हुई तो सैनिकों ने "उसकी टांगें नहीं तोड़ीं," जिससे निर्गमन 12:46 की बात पूरी हुई कि फसह के भोज के लिए चुने हुए मेमनों की हड्डियाँ तोड़ी नहीं जानी चाहिए। इन और अन्य कई रूपों में यूहन्ना ने दर्शाया कि यीशु ने फसह के प्रतीक और अर्थ को पूरा किया।

यूहन्ना 7:2, 37 में यूहन्ना ने इस्राएल के तीन अन्य वार्षिक पर्वों में भी यीशु के शामिल होने का वर्णन किया : झोंपड़ियों का पर्व। इस पर्व की सबसे महत्वपूर्ण रस्म उस बात को याद करके पानी उंडेलना थी जिस प्रकार परमेश्वर ने मरुभूमि में इस्राएल को पानी प्रदान किया था, और जिस प्रकार परमेश्वर ने हर साल इस्राएल की फसलों के लिए बारिश प्रदान की थी; और इस बात की प्रतीक्षा में भी कि परमेश्वर किस प्रकार अंत

के दिनों में अपने लोगों पर आशीष के सोते बहाएगा। और यूहन्ना ने इस समारोह और यीशु के बीच यह दिखाते हुए गहरा संबंध दिखाया कि यीशु उन सारी आशिषों का माध्यम बनेगा जो परमेश्वर इतिहास के अंत में उंडेलेगा। विशेष रूप से यूहन्ना ने बताया कि झोंपड़ियों के पर्व के अंतिम दिन यीशु ने परमेश्वर की आशिषों को देने की अपनी सामर्थ की घोषणा की। सुनिए यीशु ने यूहन्ना 7:37 में भीड़ से क्या कहा :

यदि कोई प्यासा हो तो मेरे पास आए और पीए। (यूहन्ना 7:37)

यूहन्ना ने बताया कि परमेश्वर की आशिषों का जीवन का जल यीशु से बहेगा। भूतकाल की आशीष, वर्तमान की आशीष और भविष्य की आशीष सब उसके द्वारा आती हैं। इस प्रकार यीशु परमेश्वर की उन सारी आशाओं की पूर्णता है जो झोंपड़ियों के पर्व में चित्रित थीं।

अंत में, यूहन्ना 10:22-39 में यीशु ने समर्पण का पर्व या *हनुक्काह* मनाया। समर्पण का पर्व पुराने नियम में स्थापित इस्राएल के पर्वों का कोई महत्वपूर्ण पर्व नहीं था। परंतु पहली सदी के इस्राएल के जीवन के लिए यह महत्वपूर्ण था क्योंकि यह 165 ईस्वी में यूनानी शोषकों पर इस्राएल की विजय का पर्व था, और इसके साथ-साथ वेदी और मंदिर के पुनः समर्पण का भी जो इस विजय के बाद हुआ। यूहन्ना 10:30 में जब यीशु समर्पण का पर्व मना रहा था तो उसने यह आरंभिक घोषणा की :

मैं और पिता एक हैं। (यूहन्ना 10:30)

यहूदी समझ गए थे कि वह परमेश्वर होने का दावा कर रहा था, अतः उन्होंने उस पर पथराव करने का प्रयास किया। फिर यीशु ने स्वयं को यह दर्शाते हुए अपना बचाव किया :

जिसे पिता ने पवित्र ठहराकर जगत में भेजा है। (यूहन्ना 10:36)

जब यीशु ने कहा उसे "पवित्र ठहराया" गया है, तो उसने आम यूनानी शब्द *हागीआजो* का प्रयोग किया, जिसका प्रयोग पवित्रशास्त्र बहुत बार मंदिर की रस्मों में समर्पण करने या भेंट चढाने के लिए करता है। इस सन्दर्भ में *हागीआजो* यूनानी शब्द *एग्काइनिया* का समानार्थी है, जिसका अनुवाद "समर्पण के पर्व" की अभिव्यक्ति में "समर्पण" के रूप में किया गया है।

इन रूपों में यूहन्ना ने यीशु को मंदिर के समर्पण के पर्व के साथ बहुत निकटता से जोड़ा। यह पर्व परमेश्वर की उपस्थिति के लिए मंदिर को पवित्र ठहराने के विषय में था। और उसी प्रकार से पृथ्वी पर परमेश्वर की विशेष उपस्थिति की पूर्णता के रूप में यीशु को पवित्र ठहराया गया था।

इसके अतिरिक्त कि यीशु ने मंदिर और पर्वों की अपेक्षाओं को पूरा किया, यूहन्ना ने यह भी दर्शाया कि यीशु ने परमेश्वर की व्यवस्था को भी पूरा किया।

व्यवस्था

यद्यपि मसीही प्रायः परमेश्वर की व्यवस्था के विषय में नकारात्मक रूप से सोचते हैं- वह जो हमें दोषी ठहराती है; परंतु हमें यह भी याद रखना है कि व्यवस्था सच्चे विश्वासियों को परमेश्वर की आशिषों की ओर अगुवाई करने के लिए दी गई थी।

जब आप बाइबल में व्यवस्था की ओर देखते हैं, तो यह स्पष्ट है कि जो लोग इसे पढ़ते थे उन्होंने कभी इसे नियमों और सिद्धांतों की सूची के रूप में नहीं पढ़ा। यह जीवन की एक नीति थी। अतः वे यह जानते हुए पढ़ सके कि यदि वे व्यवस्था का पालन करते हैं तो इसके पालन करने से

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें- http://thirdmill.org

उन्हें आशीष प्राप्त होगी, और मैं सोचता हूँ कि इसके कई कारण थे। पहला यह कि व्यवस्था परमेश्वर का प्रकाशन है। व्यवस्था बताती है कि परमेश्वर के अनुसार हम कैसे जिएँ। और भजनकार 40:8 में कहता है, "हे मेरे परमेश्वर मैं तेरी इच्छा पूरी करने से प्रसन्न हूँ।" अतः जब हम परमेश्वर की इच्छा के सदृश्य स्वयं को बना लेते हैं, जब हम परमेश्वर की इच्छा को जान लेते हैं, तब हमें चाहे जो कुछ भी करना हो उसे करने में, और नहीं करना चाहिए उसे न करने में बड़ा आनंद और आशीष प्राप्त होगी। अतः केवल यह बात कि यह प्रकाशन है, यह परमेश्वर की आशीष का चिह्न है, अर्थात् परमेश्वर के अनुग्रह का चिह्न है। परंतु उससे बढ़कर मैं सोचता हूँ कि यह एक आशीष है क्योंकि व्यवस्था हमारे लिए उसमें भाग लेने का निमंत्रण है जो परमेश्वर इस पृथ्वी पर करना चाहता है।

डॉ. स्टीव हार्पर

पुराने नियम में व्यवस्था का अधिकाधिक प्रयोग सकारात्मक है क्योंकि परमेश्वर की व्यवस्था परमेश्वर के चरित्र की परछाई है। और इसीलिए भजनकार परमेश्वर की व्यवस्था को हमारे मार्ग के लिए उजियाला और पांवों के लिए दीपक कहता है। भजन संहिता में दाऊद इसे मधु से भी मीठा, सोने से कीमती कहता है, और यह भी कहता है कि उसके पालन से उसका दास सचेत रहता है और उसका प्रतिफल बहुत बड़ा है। वास्तव में वह भजन इस प्रकार आरम्भ होता है, "क्या ही धन्य है वह पुरुष जो दुष्टों की युक्ति पर नहीं चलता, और न पापियों के मार्ग में खड़ा होता और न ठट्टा करने वालों की मंडली में बैठता है। वह तो यहोवा की व्यवस्था से प्रसन्न रहता है।" फिर भजन 1 एक चित्र को प्रस्तुत करता है कि जो परमेश्वर का भय मानता है और उसकी आज्ञाओं का पालन करता है वह उस वृक्ष के समान है जो बहती नालियों के किनारे लगाया गया है और जिसमें फल लगने कभी समाप्त नहीं होते। अतः व्यवस्था एक धन्य स्थान है। परंतु यह उन्हीं के लिए धन्य स्थान है जिनको परमेश्वर ने पहले क्षमा प्रदान की थी, वह क्षमा जो मसीह के द्वारा प्राप्त होती है। परंतु व्यवस्था वह निर्देशिका है कि धन्य जीवन के रूप में मसीह के अधीन कैसे जीवन जीना है। अतः पौलुस कहता है कि जो मसीह से प्रेम करता है वह व्यवस्था को पूरा करता है, कि मसीह व्यवस्था का लक्ष्य या उद्देश्य है। अतः व्यवस्था हमें हमारे पाप के बारे में बताती है, परंतु इसके साथ-साथ यह भी दिखाती है कि यीशु ने हमारे लिए क्या किया है और फिर स्वतः ही हमें जीने का मार्ग बताती है। अतः यीशु ने कहा कि पूरी व्यवस्था दो आज्ञाओं में बसी हुई है : परमेश्वर से दिल, प्राण, मन और शक्ति से प्रेम करो एवं अपने पड़ोसी से भी ऐसा ही प्रेम करो। यदि कोई ऐसे व्यक्ति को जानता है जो परमेश्वर से दिल, प्राण, मन और शक्ति से प्रेम करता है वह उसकी आशिषों को भी जानता है। और यदि कोई ऐसे व्यक्ति को जानता है जो अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करता है, वे जानते हैं कि उसमें बहुत बड़ी आशीष है। जो परमेश्वर की आज्ञाओं में विश्वासयोग्य रहते हैं उनके पास रहने या उनके साथ रहने में उदारता, दया, उपलब्धता, और धन्यता पाई जाती है।

रेव्ह. माइकल ग्लोडो

पुराने नियम में परमेश्वर की व्यवस्था को अपने लोगों के लिए एक विशेष उपहार के रूप में चित्रित किया गया था। भजन 119 और अन्य कई अनुच्छेद इसे इस्राएल के लिए परमेश्वर की आशिषों का मार्गदर्शक मानते हैं। और नए नियम में याकूब परमेश्वर की व्यवस्था को याकूब 1:25 में वह सिद्ध व्यवस्था कहता है जो स्वतंत्रता देती है, और पौलुस इसे 1 कुरिन्थियों 9:21 में मसीह की व्यवस्था कहता है। और यीशु यूहन्ना 10:35 में यह कहते हुए व्यवस्था के महत्व और मूल्य की पुष्टि करता है :

पवित्रशास्त्र की बात लोप नहीं हो सकती। (यूहन्ना 10:35)

यहाँ यीशु ने सिखाया कि व्यवस्था समेत पूरा पुराना नियम अपने लोगों के लिए परमेश्वर का अनंत और चिरस्थाई वचन है।

फिर भी यूहन्ना ने स्पष्ट किया कि व्यवस्था अपने आप में अंत नहीं थी। एक महत्वपूर्ण भाव में इसने सदैव अपने से परे यीशु की ओर संकेत किया। यूहन्ना 5:46-47 में यीशु ने अविश्वासी यहूदियों से यह कहा,

क्योंकि यदि तुम मूसा का विश्वास करते, तो मेरा भी विश्वास करते, इसलिए कि उसने मेरे विषय में लिखा है। परंतु यदि तुम उसकी लिखी हुई बातों पर विश्वास नहीं करते, तो मेरी बातों पर कैसे विश्वास करोगे। (यूहन्ना 5:46-47)

यूहन्ना ने अपने पूरे सुसमाचार में इस बात पर जोर दिया। पुराने नियम की व्यवस्था ने यीशु की ओर आगे संकेत किया था। अतः यीशु को ठुकराने का अर्थ है उस व्यवस्था को ठुकराना जिसने उसकी भविष्यवाणी की थी।

यूहन्ना द्वारा इस बात पर बल देने का एक तरीका यीशु को वे सारे शीर्षक, चरित्र और कार्य प्रदान करना था जो यहूदी धर्म ने व्यवस्था को दिए थे। उदाहरण के तौर पर, यहूदी धर्म ने कहा था कि तुम्हें एक भूखे शत्रु को "तोराह (व्यवस्था) की रोटी" का भोजन देना चाहिए। यहूदी धर्म का दावा था कि "तोराह के शब्द जगत के लिए जीवन हैं।" और यूहन्ना 4:11 में यीशु जीवन के जल का देने वाला है। यहूदी धर्म ने यह भी कहा कि "व्यवस्था की ज्योति हर मनुष्य को प्रकाशित करने के लिए दी गई है।" और यूहन्ना 1:9 कहता है कि यीशु वह "सच्ची ज्योति है जो हर एक मनुष्य को प्रकाशित करती है।" ये यूहन्ना के सुसमाचार के कुछेक उदाहरण हैं जो दिखाते हैं कि यीशु परमेश्वर की व्यवस्था का प्रकटीकरण था। यीशु और उसकी शिक्षाएं उन सबके लिए आज भी जीवन और ज्योति के स्त्रोत हैं जो उसका अनुसरण करते हैं।

यूहन्ना चाहता था कि उसके पाठक समझ लें कि यीशु के लिए मसीह होने का अर्थ क्या था। वह चाहता था कि वे इस बात की समझ में विश्राम प्राप्त करें कि यीशु ने अपनी कलीसिया को त्यागा नहीं है, बल्कि वह हमारे साथ सदैव उपस्थित है। वह चाहता था कि वे यीशु पर भरोसा रखें, ताकि वे उसके द्वारा परमेश्वर की आशिषों को प्राप्त करें। और वह चाहता था कि वे परमेश्वर के वचन के प्रति आज्ञाकारी रहें, ताकि वे उसके याजकों के राज्य के रूप में प्रभु की महिमा करें।

हमने यहाँ यीशु पर विश्वास करने के मुख्य विषयों और मसीह के रूप में यीशु की पहचान का अध्ययन कर लिया है, इसलिए अब हमें परमेश्वर के पुत्र के रूप में उससे गहराई से जुड़ी पहचान पर ध्यान देना चाहिए।

परमेश्वर का पुत्र

परमेश्वर के पुत्र के रूप में यीशु की पहचान मसीह के रूप में उसकी पहचान के समानांतर है क्योंकि वे दोनों इस बात को दर्शाते हैं कि वह पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य का राजा है। परंतु इन सारे शब्दों पर अलग-अलग चर्चा करना महत्वपूर्ण है क्योंकि उन सबका अलग-अलग अर्थ है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें- http://thirdmill.org

यूहन्ना के सुसमाचार में परमेश्वर का पुत्र नामक शब्द-समूह दैवीय मसीहारुपी राजा को दर्शाता है। एक ओर यह दैवीय पुत्र के भाव को दिखाता है जो स्वर्ग से पृथ्वी पर आया, जैसा कि यूहन्ना 10:22-40 में। दूसरी ओर यह इस्राएल के राजा या मसीह का समानार्थी हो सकता है, अर्थात् दाऊद का मानवीय वंशज जो इस्राएल का न्यायसंगत राजा था, जैसा कि हम यूहन्ना 1:49 और 11:27 में देखते हैं।

यूहन्ना के सुसमाचार में यीशु के परमेश्वर के पुत्र होने के अर्थ को अच्छी तरह से समझ लेना हमें यह देखने में सहायता करता है कि यूहन्ना ने इस बड़े रहस्य पर कैसे बल दिया कि यीशु पूर्ण रूप से दैवीय है और पूर्ण रूप से मानवीय।

दैवीय

यूहन्ना द्वारा पुत्र के दैवीय होने को दर्शाने का एक रूप पुत्र यीशु और पिता परमेश्वर के बीच संबंध को दिखाना था। ऐसे कई अनुच्छेद हैं जो दर्शाते हैं कि यह संबंध उस संबंध से गुणात्मक रूप से अलग है जो पिता का अपनी मानवीय संतान, अर्थात् विश्वासियों के साथ है। यूहन्ना 10:30-33 में यीशु और यहूदियों के बीच इस वार्तालाप को सुनें :

> **(यीशु ने कहा) "मैं और पिता एक हैं।" यहूदियों ने उस पर पथराव करने को फिर पत्थर उठाये। इस पर यीशु ने उनसे कहा, "मैंने तुम्हें अपने पिता की ओर से बहुत से भले काम दिखाए हैं; उनमें से किस काम के लिए तुम मुझ पर पथराव करते हो?" यहूदियों ने उसको उत्तर दिया, "भले काम के लिए हम तुझ पर पथराव नहीं करते परंतु परमेश्वर की निन्दा करने के कारण; और इसलिए कि तू मनुष्य होकर अपने आप को परमेश्वर बनाता है।" (यूहन्ना 10:30-33)**

यहूदी सही रूप से समझ गए थे कि परमेश्वर पिता के साथ एक होने के यीशु के दावे का अर्थ यह दावा करना था कि यीशु वास्तव में परमेश्वर था।

इससे बढ़कर यूहन्ना 14:9 के अनुसार यीशु परमेश्वर का वह अद्वितीय पुत्र है जिसने पिता को इस प्रकार प्रकट किया जो कोई कभी नहीं कर सका। यद्यपि 1:18 "पुत्र" शब्द का प्रयोग नहीं करता फिर भी विचार बिल्कुल वही है। यीशु अपने लोगों के सामने पिता को सिद्ध रूप से प्रकट करता है। वास्तव में, यूहन्ना 14:9 में यीशु के अनुसार यीशु को देखना पिता को देखना है।

और प्रकाशन के विषयों से परे यीशु के पास जीवन और मृत्यु, एवं अंतिम न्याय पर पूरा दैवीय अधिकार है। जैसा कि हम यूहन्ना 5:21-22 में पढ़ते हैं :

> **जैसा पिता मरे हुओं को उठाता और जिलाता है, वैसे ही पुत्र भी जिन्हें चाहता है उन्हें जिलाता है। पिता किसी का न्याय नहीं करता, परंतु न्याय करने का सब काम पुत्र को सौंप दिया है। (यूहन्ना 5:21-22)**

यूहन्ना ने इस बात को स्पष्ट किया कि यीशु देह में परमेश्वर था। वह स्वयं परमेश्वर था, और उसके पास पृथ्वी पर परमेश्वर के कार्य को पूरा करने का असीमित अधिकार था।

यूहन्ना द्वारा पुत्र की दिव्यता को प्रकट करने का अन्य माध्यम "मैं हूँ" के रूप में यीशु का स्वयं का वर्णन है। निर्गमन 3:14 में परमेश्वर ने "मैं जो हूँ सो हूँ" कहते हुए मूसा के सामने अपने वाचाई नाम को प्रकट किया। यह उस दैवीय नाम का आधार था जिसे हिंदी में प्रायः केवल "प्रभु" के नाम से प्रस्तुत किया जाता है। परमेश्वर

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें- http://thirdmill.org

के नाम को इतना पवित्र माना जाता था कि यीशु के समय के यहूदी उसका नाम तक नहीं लेते थे। परंतु यीशु ने उसे स्वयं पर लागू किया।

> **यूहन्ना के सुसमाचार में "मैं हूँ" कथन हैं जो यीशु द्वारा कही बातों में लगभग 24 बार आते हैं। किसी अन्य सुसमाचार से ये अधिक हैं और पूरे नए नियम के आधे हैं। सबसे पहले यह इसलिए महत्वपूर्ण हैं क्योंकि यह यीशु को पुराने नियम के परमेश्वर के समतुल्य रखने का भाव है। और इनमें से ऐसे सात कथन स्पष्ट रूप से "मैं हूँ" कथन हैं, और यूहन्ना 8:58, 59 में जब एक अवसर पर वह ऐसा कहता है तो वे पुराने नियम का परमेश्वर होने का दावा करने पर पत्थर उठाकर उसे मारने का प्रयास करते हैं। बाकी के "मैं हूँ" कथन किसी न किसी बात से जुड़े हैं, जैसे "रोटी मैं हूँ"; ज्योति मैं हूँ"; "मार्ग, सत्य और जीवन मैं हूँ"। यहाँ यीशु परमेश्वर होने का दावा करता है, परंतु वह परमेश्वर जो मानवीय जीवन से जुड़ा है। अतः मैं सोचता हूँ कि हमें उन सारे कथनों को एक साथ पढना चाहिए जिन्हें यूहन्ना हमारे सामने रखता है जो यीशु ने किया है, जैसे, "इस मनुष्य का अस्तित्व समय से भी पहले का है क्योंकि वह परमेश्वर है।" जब वह यूहन्ना 8:58 में यह दावा करता है, "पहले इसके कि अब्राहम उत्पन्न हुआ, मैं हूँ"। यह 2000 वर्ष पहले जीवित होने का दावा नहीं है; यह वह परमेश्वर होने का दावा है जिसने अब्राहम के साथ बात की और वह परमेश्वर जो अनंत है।**
>
> **डॉ. जॉन मैक्किन्ले**

यूहन्ना 8:12-59 में यीशु और यहूदी अगुवों का ज्वलनशील अमन-सामना हुआ। विवाद यीशु के पुत्र होने के दावे पर और उसके विरोधियों के अब्राहम के पुत्र होने के दावे पर था। पद 44 में यीशु ने उन्हें बताया कि उनका सही पिता शैतान है। इसके जवाब में उन्होंने यह पूछते हुए उसे चुनौती दी कि क्या वह अब्राहम से बड़ा है। तब यीशु ने यूहन्ना 8:58 में इन शब्दों के साथ विवाद को समाप्त किया :

> **पहले इसके कि अब्राहम उत्पन्न हुआ, मैं हूँ। (यूहन्ना 8:58)**

यीशु ने यह नहीं कहा "मैं था" जो ज्यादा स्वाभाविक होता यदि उसे यह कहना होता कि वह अब्रहम से आयु में बड़ा है। उसने कहा, "मैं हूँ" जिसके द्वारा उसने दावा किया कि वह न केवल अब्राहम से बड़ा और महान है, बल्कि इस्राएल का अनंत परमेश्वर भी है।

यीशु की दिव्यता पर विचार करने के बाद, यूहन्ना की इस बात पर चर्चा करें कि परमेश्वर के पुत्र के रूप में यीशु पूर्ण रूप से मानवीय भी था।

मानवीय

दाऊद के समय से "परमेश्वर का पुत्र" शब्द-समूह का प्रयोग उस मानवीय राजा के लिए किया जाता था जो इस्राएल के राजा के रूप में दाऊद के सिंहासन पर बैठता था। हम इसे भजन 2:7 और 2 शमूएल 7:14 जैसे स्थानों पर देख सकते हैं। यूहन्ना 7:42 भी दिखाता है कि यहूदियों की अपेक्षा थी कि मसीह दाऊद के वंश से आएगा। और यूहन्ना 1:49 में "परमेश्वर का पुत्र" शब्द-समूह का प्रयोग "इस्राएल के राजा" के समानार्थी के रूप में किया जाता है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें- http://thirdmill.org

यूहन्ना के कई अन्य अनुच्छेद भी यीशु को यहूदियों के राजा के रूप में दर्शाते हैं, जैसे 12:13-15,18:33-40 और 19:1-21। सारांश में जब यूहन्ना ने यीशु को परमेश्वर के पुत्र के रूप में दर्शाया तो उसका आंशिक अर्थ था कि यीशु दाऊद का सिद्ध मानवीय वंश था जो इस्राएल पर सदा-सर्वदा राज्य करेगा।

यूहन्ना का सुसमाचार बल देता है कि परमेश्वर के पुत्र के रूप में यीशु में संपूर्ण दैवीय राजत्व और संपूर्ण मानवीय राजत्व पाया जाता है। वह प्रत्येक आशा जो पुराना नियम ब्रह्मांड पर परमेश्वर के राज्य में रखता है, और वह प्रत्येक आशा जो पुराने नियम ने दाऊद के वंश के मसीहा के राज्य के लिए स्थापित की है, वह सब यीशु के राजत्व में पूरी होती है।

अब तक हमने यीशु पर विश्वास करने के मुख्य विषयों, और मसीह एवं परमेश्वर के पुत्र के रूप में यीशु की पहचान को देख लिया है। अतः अब हम जीवन की उस आशीष की ओर मुड़ने के लिए तैयार हैं जो मसीह पर विश्वास करने वालों को प्राप्त होती है।

जीवन

यूहन्ना ने अपने सुसमाचार में "जीवन" शब्द का प्रयोग 36 बार किया है। अन्य तीनों सुसमाचार लेखकों ने मिलकर इसका 16 बार प्रयोग किया है। परंतु यह केवल संख्या ही नहीं बल्कि इस सुसमाचार में उसका महत्व है जो जीवन प्रदान करता है। इसमें वह भूमिका भी है जो "जीवन" सुसमाचार के संदेश में अदा करता है। यूहन्ना 17:3 में यीशु ने "जीवन" को इस प्रकार परिभाषित किया :

> **और अनंत जीवन यह है कि वे तुझ एकमात्र सच्चे परमेश्वर को और यीशु मसीह को, जिसे तूने भेजा है, जानें। (यूहन्ना 17:3)**

निःसंदेह यह ज्ञान परमेश्वर के बारे में बौद्धिक जानकारी से कहीं बढ़कर था। इसमें परमेश्वर के बारे विवेकपूर्ण ज्ञान भी शामिल होता है। परंतु महत्वपूर्ण रूप में यह उसके साथ एक संबंध है, अर्थात् हमारे जीवनों में उसकी उपस्थिति और सहभागिता का व्यक्तिगत अनुभव। हमारे सृष्टिकर्त्ता के साथ हमारी संगति ही मानवीय अस्तित्व का मुख्य लक्ष्य है।

यूहन्ना 3:16 के अनुसार इस जीवन को "अनंत" कहा जा सकता है, अर्थात् यह कभी समाप्त नहीं होगा। परंतु यूहन्ना इसे स्पष्ट करता है कि इस अनंत जीवन को प्राप्त करने के लिए हमें मरने की आवश्यकता नहीं है। वास्तव में, विश्वासियों में पहले से ही अनंत जीवन है। जैसा कि यीशु ने यूहन्ना 5:24 में कहा :

> **जो मेरा वचन सुनकर मेरे भेजनेवाले पर विश्वास करता है, अनंत जीवन उसका है; और उस पर दंड की आज्ञा नहीं होती परंतु वह मृत्यु से पार होकर जीवन में प्रवेश कर चुका है। (यूहन्ना 5:24)**

जो यीशु पर विश्वास करते हैं उनके लिए जीवन पहले से ही परमेश्वर का दान है।

> **आप जानते हैं, जो शब्द अनंत जीवन के रूप में आते हैं वे हमारे पास इतनी सरलता से आते हैं क्योंकि पवित्रशास्त्र में हम उन्हें बार-बार पढ़ते हैं। हम जानते हैं कि मसीह के द्वारा हमारे उद्धार का एक दान अनंत जीवन है। परंतु आप जानते हैं, हम समय-आधारित लोग हैं। हम इसी प्रकार से सोचते हैं। हम सेकंडों, मिनटों, घंटों, दिनों, महिनों और वर्षों के आधार पर सोचते हैं, अतः हमारे लिए यह सोचना सरल है कि अनंत जीवन वह जीवन है जो एक बड़े कैलेंडर के साथ है, ऐसा कैलेंडर जो कभी समाप्त नहीं होता। यह वास्तव में अनंत जीवन का**

बाइबल आधारित रूप नहीं है। पवित्रशास्त्र में अनंत जीवन का पहला अर्थ यह है कि यह परमेश्वर में जीवन है। यह परमेश्वर है जो अनंत है। परमेश्वर और हम मानवीय प्राणियों में एक अंतर यह है कि हम क्षणिक लोग हैं। हम समय को महसूस करते हैं। परंतु परमेश्वर असीमित है। और उस बलिदान के द्वारा जो मसीह ने हमारे लिए किया है, उसके द्वारा जो मसीह में पाए जाते हैं वे परमेश्वर के अनंत जीवन में प्रवेश करते हैं। अतः अनंत जीवन का अर्थ है कि हम मसीह में परमेश्वर के साथ सदैव जीवित रहते हैं। यह ऐसा कलेंडर नहीं जिसके पन्ने कभी समाप्त नहीं होते। यह अस्तित्व की दशा है जो स्वयं परमेश्वर पर आधारित है और इस तथ्य पर कि वह अनंत है। परंतु आप जानते है, उस दोहरे शब्द में जो दूसरा शब्द है वह वास्तव में महत्वपूर्ण है, अर्थात् "जीवन," क्योंकि पवित्रशास्त्र में जीवन और मृत्यु में एक अंतर दिखाया गया है। और न्याय के बाद, अनंत जीवन और दूसरी मृत्यु के बीच एक अंतर है। अतः अनंत जीवन यह पुष्टि भी है कि मसीह में, जिनके पाप क्षमा किए गए हैं, हम परमेश्वर और मसीह के साथ सदैव के जीवन को जानते हैं। हम अस्तित्व की एक ऐसी दशा में प्रवेश करते हैं जो असीमित, अनंत है, यह सब परमेश्वर की महिमा और परमेश्वर की उपस्थिति में सदा तक रहने और उसकी स्तुति करने की राहत, आनंद और उमंग के विषय में है। इसकी विपरीतता नरक है, जिसे दूसरी मृत्यु कहा गया है। अतः यहाँ जिसके बारे में हम बात कर रहे हैं वह अनंतता की लम्बाई नहीं है। यह नरक में अनंतता को बिताने की अपेक्षा मसीह के साथ बने रहने की महानता है और परमेश्वर के साथ संगति है।

डॉ. आर. अल्बर्ट मोह्लर, जूनियर

अनंत जीवन दैवीय दंड से अनंत आनंद और शांति में लेकर जाने का छुटकारे का दान है। और यह केवल परमेश्वर से उसके पुत्र यीशु पर विश्वास करने के द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। और यूहन्ना का सुसमाचार इसके लिए कम से कम दो कारणों पर बल देता है। पहला, यीशु सृष्टिकर्त्ता है और जीवन का स्त्रोत है, जैसा कि हम यूहन्ना 1:1-5, 5:26, 11:25 और 14:6 में पाते हैं। और इसलिए, यीशु के पास अधिकार है कि वह उनको जीवन दे जिनको वह चाहता है। और यीशु ने यह बात यूहन्ना 5:21 में स्पष्ट रूप से कही है।

अनंत जीवन केवल यीशु के द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है इस बात का दूसरा कारण यह है कि केवल यीशु के पास जीवन के शब्द हैं, अर्थात् सुसमाचार का संदेश जो परमेश्वर के उद्धार के ज्ञान की ओर अगुवाई करता है। यीशु ने इसे यूहन्ना 6:63 और 12:49-50 जैसे स्थानों पर स्पष्ट किया। और पतरस ने यूहन्ना 6:68 में इसकी पुष्टि की।

यीशु "एकमात्र परमेश्वर है"; या जैसे कि यूहन्ना 1:18 में उसे "एकलौता परमेश्वर" कहा गया है। किसी ने स्वर्गीय पिता को वैसे प्रकट नहीं किया जैसा यीशु ने किया है, क्योंकि कोई पिता के पास से वैसे नहीं आया जैसे कि यीशु आया है। परमेश्वर के प्रकटकर्त्ता के रूप में यीशु की अद्वितीय भूमिका "एकलौते परमेश्वर" की उसकी पहचान पर आधारित है जो हमें पिता को दिखाने तथा अनंत जीवन को देने आया।

और इसलिए यूहन्ना के पूरे सुसमाचार में यीशु उन सबका जीवनदाता है जो विश्वास करते हैं। वे जो विश्वास नहीं करते वे उसके शब्दों को नहीं समझते, और वे उस जीवन को ठुकरा देते हैं जो वह देता है। परंतु जो विश्वास करते हैं वे अभी से अनंत जीवन को और आने वाले युग में असीमित आशिषों को प्राप्त करते हैं।

निष्कर्ष

इस अध्याय में हमने इसके लेखक और लिखने के अवसर के आधार पर यूहन्ना रचित सुसमाचार की पृष्ठभूमि का अध्ययन किया है; हमने इसकी संरचना और विषयवस्तु का सर्वेक्षण किया है; और हमने विश्वास करने के मुख्य विषयों, मसीह और परमेश्वर के पुत्र के रूप में यीशु की पहचान, और उसके नाम में जीवन की आशीष का अध्ययन भी किया है।

यूहन्ना का सुसमाचार हमें दर्शाता है कि यीशु परमेश्वर की आशीष की सारी प्रतिज्ञाओं की पूर्णता है। यीशु मसीह है। वह परमेश्वर की हर महिमामय प्रतिज्ञा को पूरी कर सकता है और करेगा क्योंकि यीशु उद्धार देने वाला परमेश्वर का पुत्र है। और उन प्रतिज्ञाओं और उस उद्धार में अनंत जीवन का अद्भुत दान है। यदि हम उन आशिषों को थामे रहते हैं जो यूहन्ना के सुसमाचार में पढ़ते हैं, तो हम इसे अच्छी तरह से समझ पाएँगे और हमारे जीवनों पर इसे लागू कर पाएँगे। और यदि हमारे जीवन में हम इसे हमारे हृदय में रखते हैं, तो हम परमेश्वर की महिमा कर पाएँगे और पुत्र यीशु के द्वारा दिए अनंत जीवन का आनंद ले पाएँगे।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें- http://thirdmill.org